

सुद्धकः
 मूलचन्द्र किसनदास कापड़िया,
 “ जैनविजय ” प्रि० प्रेस-सूरत ।



प्रकाशक—

मूलचन्द्र किसनदास कापड़िया,
 दि० जैन पुस्तकालय, चंदावाड़ी-सूरत ।

प्रसूतिकाचक्र ।

इस विधानका प्रचार बुन्देलखंड मध्यहिन्दुस्थानमें विशेष है, और इसीका पाठ पढ़कर निर्वाणलाह चढ़ाया जाता है ।

इसके कर्त्ता कवि जगतरामजी कहेंकि निवासी थे, और कौन कौनसे ग्रंथोंकी रचना की, इस बातका पता न लगा ।

तीन प्रतियोंके आधारसे इसका संशोधन सावधानीसे किया गया है, तो भी अल्पज्ञता, प्रमाद और दृष्टि-दोषसे कई अशुद्धियाँ रही होंगी उन्हें पाठकगण शोष-संभालके पढ़ेंगे । यदि दूसरी बार छपनेका मौका आया तो पाठकोंकी सूचनानुसार वे अशुद्धियों दूसरी बारमें ठीक कर दी जायेंगी ।

त्रै० वि० में ७० ह्रिके कई मंत्र भाषामें है, हमने कविकी कृतिको त्रिगाडना ठीक न समझ ज्योंके त्यों ही मंत्र रहने दिये हैं । यदि कोई भाई सरूतमें ही मंत्र कहना चाहें, तो त्रैलोक्यसारकी गाथाओंके अनुसार मंत्र बनाकर पढ़ें । इसीलिये पाठकोंके सुभीतेके लिये गाथाओंके नम्बर दिये हैं । अंतमें निर्वाणकांड भाषा भी सामिल किया है ।

आश्विन सुदी १२

धीर स० २४४८ ।

कुन्दनलाल जैन,

चन्दावाड़ी-बम्बई नं० ४

सूची ।

- | | |
|--|----|
| १ श्रीवर्द्धमान निर्वाणपूजा | १ |
| २ पीठकादि पूजा | ८ |
| ३ वर्त्तमान चतुर्विंशति जिन-निर्वाणभूमि पूजा | १७ |
| ५ त्रैलोक्य जिनालय-विधान | ६१ |
| ६ निर्वाणकांड भाषा (कविभैया भगवतीदासजी विरचित) | ९० |

शुद्धिपत्र ।

सूचना—पाठक निम्न अशुद्धियोंकी सुधारकर पढ़ें ।

पृष्ठ ७ पंक्ति पहली तपादिक के बदले तूपादिक, पृष्ठ १५ पंक्ति तीसरी सर के बदले शव और इसी पृष्ठकी पांचवी पंक्तिमें सरके बदले शव पढ़ें ।

ॐ

नमः सिद्धेभ्यः ।

स्वर्गीय कवि जगतरामजीकृत-

बृहत् निर्वाण-विधान

और

त्रैलोक्य जिनालय-विधान

१ श्रीवर्द्धमान निर्वाण पूजा ।

बोहा-प्रथम चरम जिन चरन जुग, नाथवंश वर पाय ।

सिद्धारथ त्रिसला तलुज, हमपर होहु सहाय ॥ १ ॥
ॐ श्रीभिनप्रतिमासे परिपुष्यन्तु सिंघेत् ।

अश्लिष्टं ।

पुरुषोत्तार तज धवल, लठ जु अपादकी ।
उतरा फागुन माहिं, वसे उर मायकी ॥
अवधि अमरपति जान, रतन वरसाह्यौ ।

कुन्दनपुर हरि आय, सु मंगल गाह्यौ ॥ २ ॥

ॐ आपाहशुक्लपष्ठीदिने गर्भमंगलमज्जिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्यपामीति
स्वाहा ॥ १ ॥

दोहा ।

दिवस पंच दस मास वसु, वरस पचत्तर सार ।
रहे चतुर्थम कालके, धीर लग्यो अवतार ॥ ३ ॥

सुगरी छंद ।

सुकल भंत चतुर्दसिके दिना । नक्षत उतरा फागुन सुरगना ।
साजि गजेन्द्र गिरेन्द्र न्वाह्यौ । लखि जिनेन्द्र सु मंगल गाह्यौ ॥४॥
श्लोक ।

पंचामने पग चिन्ह तछु, तन उतंग कर सात ।

वरन हेभै जिन बिम्ब नित, एतह्नु भव्य प्रभात ॥ ५ ॥

१ मिठ, २ सोगा.

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यत्रयोदशीदिने जन्मसंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरनिनेन्द्राय अर्चं निर्वपा-

भीति स्वाहा ॥ २ ॥

अद्विल छंद ।

आशु बहत्तर बरस, कुंवरपद तीस जू ।

सो लखि अथिर उदास भए जगदीस जू ॥

तथ लौकान्तिक देव, सु थिरकर थल गये ।

रचि सुर तुरत नवीन, प्रभू सिविको लये ॥ ६ ॥

पुरतें निकट न दूर, मनोहर बन गये ।

चन्द्रकान्ति मणिमई सिखा लखि सुर ठये ॥

सिविकालें पधराय, तहाँ सुरगन खड़े ।

दुविधि परिग्रह त्याग, प्रभू समरस बड़े ॥ ७ ॥

सुन्दरी छंद ।

प्राँची दिसि सन्मुख, पद्मासन मोंडिकें ।

नमः सिद्ध कहि, पंचसुष्टि कचै काढिकें ॥

१ पालकी, २ पूर्व दिशा, ३ बाल.

निज आतम सम, देव, सिर्वग सप्त साल वै ।
त्रोददा विध चारिन्न, धरथौ अत्रिणाख वै ॥ ८ ॥

शगसिर मास दसै सुदि, जनम नखत शरी ।
ता दिन परम दिगंबर पद प्रसुजू धरी ॥
साल विटप तर बैठि, बेर अपराहिनी ।

दीक्षा सखी मिलाय वधू शिवदायिनी ॥ ९ ॥
दोहा ।

जिन शिर केश पविन्न अति, रतन पिटारे धार ।

क्षीरोदधि पधराय हरि^१; निजथल गण नृतकार ॥१०॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ निर्बेपा-

मीति स्वाहा ॥ ३ ॥

दोहा ।

तन समत्व तजि विश्वपति, शिलापट्ट वर पाय ।

आरूढे तप धरत हौ, चौथो ज्ञान उपाय ॥ ११ ॥

१ सिबोकी, २ इन्द्र.

अजर अमर अव्यक्त जो, अजपा ताकी ध्याय ।
ध्यान सिद्धिके अर्थ प्रभु, अचल मेरु सम थाय ॥ १२ ॥

अद्वैत ।

गुप्त तीन गढ़ तुल्य भये तिनके महा ।
संजम बखतर तुल्य भए कहिना कहा ॥
कर्म-शत्रु जीतनकी रुचि लागी तथै ।
गुन अनेक सेना भट होत भए तबै ॥ १३ ॥
अनशनादि तप धारि द्वादश माहिजी ।
ध्यान विषै सुविशेष शुद्धता पायजी ॥
अष्टावीस मूलगुन अग्रेसर कढ़े ।
कर्म प्रबल अरि तिनहि जीतने प्रभु चढ़े ॥ १४ ॥

गीतिका छंद ।

खढ़े शुक्ल गजेन्द्र लेश्या, भूप अनुप्रेक्षा तुके ।
धाय धर्म-कृपानै गहि, अरि मोहसेनापर शुकै ॥

उत्कृष्ट निज परिनाम कटकतनी सु रक्षाकारनै ।
वर ज्ञानरूप प्रधान अश्रेष्ठुर कियो जगतारनै ॥ १५ ॥

अडिङ्ग ।

अति विशुद्ध परिणाम सेनपति छाह्यौ ।
रागादिक अरि प्रबल हनन उद्यम कियौ ॥
ध्यान जतन कर मूल प्रगट कर तंत्रके ।
करे चलाचल वीर जिनेद्वर सत्रके ॥ १६ ॥
अधःकरणके आव जो प्रथमहिं भायकै ।
हौं परनाम न अन्ध क्षपक दिस जायकै ॥
सुकल ध्यान अस प्रथम ध्याय ता करम लै ।
मोह प्रबल करि घात जाय दारम थलै ॥ १७ ॥

गीतिका छंद ।

ता थलै दूजे सुकल थल त्रयै घातिया हनि जय लयौ ।
चढ़ि तेरमें गुणस्थान श्रीजिन समोसरन विभौ ठयौ ॥

१ बारहवौं क्षीणमोद गुणस्थान । २ तानायणीय, दर्शनावरणीय, भन्तराय ।

रवि कोट वेदी भूमिपर मध थंभ तपादिक (?) जहाँ ।
जोजन प्रमान जु सोम गी निरवान पद पूजत तहाँ ॥१८॥

ॐ ह्रीं वेशाखशुक्लशभ्या ज्ञानकल्याण प्राप्ताय श्रीमहावीरग्निन्द्राय अर्घं निर्धपाभीति
स्वाहा ॥ ४ ॥

शार मगरही ।

करत बिहार जिनेका भविक उपदेशते ।
सकल संघ कर जुक्त चर्म तीर्थग ते ॥
जाना विधि अतिशय कर जुक्त प्रभू तहाँ ।
आनि धिराजै विपुलाचल पर्वत जहाँ ॥ १९ ॥
जहँ दिव्यधुनि प्रलि शब्द जय सभामंडप भवनमें ।
भयोपदेश सो भाइयो तिन निकट निर्वाणक समै ॥
तव सुर अलुर नर इन्द्र करि अर्चित स्विग वर जानकै ।
पावापुरी उद्यान सार तहाँ पधारे आनकै ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णमावस्यायां गोक्षमगलमडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्ध
पामीति स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं इत्युच्चार्यं कर्णिकायां परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

२ पीठकादि पूजा ।

देहा ।

महावीरने जा समै, गमन कियो शिवखेत ।

सोई समय विचारिकें, पूजौं सुधी स्वहेत ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं महावीर सम्पतिवर्द्धमानादिकानेकनामस्त्युक्तभगवत्त्रिजिनेन्द्र अत्र अवतर
अवतर संवोषट् । आह्वानन । अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्नित्तो भव
भव वषट् सन्निधीकरण ।

अष्टक ।

चौपाई ।

भंगल निर्वाणक महावीर, प्रात समै पूजौ भवि धीर ।

दस अतिशय जनमत जिन पाय, केवलग्यानमांदि दस गाय ॥

तिनि जिनवरप्रति चरनन ओर, दे जलधार जुगल कर जोर ।

भंगल निर्वाणक महावीर, प्रात समै पूजौ भवि धीर ॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकपातश्रीमहावीरजिनेद्राय जन्मजरा मृत्युविनाशनाथ जल

निर्गमिती स्वाहा ॥ १ ॥

जिनके सुरकृत चौदह सार, ये अतिसै चौतीस बितार ।
तिन जिनवरप्रति पूजनधारि, भ्रमर लुब्ध वर बंदन गारि ॥ मंगल०

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकामाप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवातापदिनाशनाय चन्द्रनं निर्वे-
पामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अष्ट प्रातिहारज जुत देव, जिनकी इन्द्र करै सत सेव ।
तिन जिनवरप्रतिको अवलोक, ले वर शालि अखंडित पोख ॥
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकामाप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदमाप्तये अक्षतान् निर्वे-
पामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

जिनके नंत चतुष्टय सार, ये गुन छयालिस हूँ जग तार ।
तिन जिनवरप्रति पूजन सार, लेवर सुमन विविध परकार ॥ मं०
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकामाप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्टपं निर्वे-
पामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

ध्रुवा तृषादि आठदस दोष, हरत सिवग वर भवदधि सोष ।
तिनि जिनवर प्रतिबिंब निहार, पूजनकों भरि नेवज थार ॥ मंग०
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्रप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय शुषारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व-
यामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

लोकालोक भेद जिन गाय, जीव अजीव तत्त्व दरसाय ।
तिन प्रतिबिंब निरख निज हेत, दीपक ले निर्मल भवि चेत ॥ मं०
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्रप्ता श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व-
यामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

मिथ्या अमन्तर अमै अनादि, जगत जीव जगमं बहुत वादि ।
तिनको शिवगति सार बताय, तिनप्रति धूप दशांग चढ़ाय ॥ मं० ॥
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्रप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्व-
यामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

जिनर्थप उपदेशौ हितकार, चलो जात अषताई सार ।
परमत खंडन संडन लोक, तिनप्रति ले फल चरनन ठोक ॥ मंग०

१ भर्म.

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्रप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति
स्वाहा ॥ ८ ॥

जिनके समीसरनमें साध, चौदा सहस एकदस बाध ।
ऐसे जगत प्रभू पद पाय, लै जलादि पूजौं जिनराय ॥ मंगल० ॥
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्रप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपा-

मीति स्वाहा ॥ ९ ॥

राग विलावल ।

प्रकृति सात महावीर प्रभू, जिन प्रथम विदारी ।
तीन आठ जे भानिके, नव छत्तीस सिधारी ॥
दसमें लोभ द्वादसे सोलह तहाँ जु टारी ।
त्रैसठ प्रकृति खिपाइयो तिन जिन बलिहारी ॥ १ ॥

दोहा ।

सैंतालीस प्रकृति हनी, कर्म घातिया कीर ।
नाम तीनदस आशु त्रय, नाशि भये महावीर ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकपात्तायश्रीमहावीरिनिन्द्याय अनर्घ्यपदपाप्तये पूर्णार्घ्यं निवे-
पामीति स्वाहा ॥

जयमाला ।

दोहा ।

पंच नामधर ते सुगुरु, पावापुर वन आय ।
शेष करम रिपु जीतने, शिव मग चलन उपाय ॥ १ ॥

छन्द मन्त्रिक ।

आये जहँ त्रिजगपति, ध्यान दीनो महा ।
त्रितिय पद शुक्लं मांडो, सु हानी तह्यो ॥
तब प्रसु दिव्यधूनि, शब्द रहिते भये ।
अंतके दिवस बाकी, चतुर्दश रहे ॥ २ ॥
प्रभु गये उल्लाधि, तेर गुणस्थानतैं ।
चढ़ि अजोगे शुक्ल लुरियै पद ध्यानतैं ॥

१ वीर, महावीर, अतिवीर, मन्गति, वन्दमान । २ चौथे ।

जोग सु निरोध करि चरम जुग समय जे ।
 हनि बहसर चरम समय ज्योदस जजे ॥ ३ ॥
 चौदमें अंत सु अघातिथा जय लई ।
 वेतनाशक्ति दैदीप्य परगट भई ॥
 भांति इह अष्ट अरि कर्म दल हनि गये ।
 ऊर्ध्व जिन गमन कर शिवपुरी थिर भये ॥ ४ ॥
 पक्षवर अमर, कार्तिक चतुर्दशि दिना ।
 स्वातिवर नखत परभात समघा गिना ॥
 लोकके शिखर जिनदेव आरुद्रियौ ।
 सुख अनंतौ निरन्तर जहाँ पूरियौ ॥ ५ ॥
 मोह अरि धीसवसु प्रकृति जुत क्षय क्रियौ ।
 प्रथम क्षायकसम्पत्त गुन प्रगटियौ ॥
 पंच भट सहित ज्ञानावरन चूरियौ ।
 तब अनंतौ वृत्तिघ ग्यान गुन पूरियौ ॥ ६ ॥

दरशनावरन नव प्रकृति जुत दलमलौ ।
 तष अनंतौ सुदर्शन त्रितिय गुन मिलौ ॥
 अंतराय जु करम पंच भट जुत हनौ ।
 तच तुरिय धीर्य गुन जिन अनंतौ बनौ ॥ ७ ॥

पवरी छन्द ।

इक तीत्रकै भट जुत नाम मार, पंचम सूक्ष्म गुन प्रगट सार ।
 चव कटक सहित कर आयु नाश, छठमा अवगाहन गुन प्रकाश ॥ ८ ॥
 हनि गीत करमको जोर ताय, सातम जु अगुरु लघु गुन उपाय ।
 जिन जुगल वेदनी घाति पाय, गुन अष्टम अव्यापय भाय ॥ ९ ॥
 इन आदि अनंते गुन समाज, पाथी प्रभु मुक्तिपुरी स्वराज ।
 तय ही सुरेश बल अवधि पाय, निज सेन साज सय देव भाय ॥ १० ॥
 तादिन वह पुरी प्रकासरूप । दीपन समूह करके अनूप ।
 भरती अकाश सय दिशानि मांहि, दीपकमाला प्रजुलित लखाहि ॥ ११ ॥

१ १३ प्रकृति ।

तब परमौदारिक प्रभु शरीर, मंगल पंचम लखि सुर गहीर ।
 सुभ गंध पहुप आदिक मनोग, वसु ब्रव्यनिकर पूजा नियोग ॥१२॥
 फिर बंदन अगरादिक लियाय, तब वर उतंग सुर सर (?) रचाय ।
 जिन तेने मंगलमय तहँ सचाय, तब अश्रिकुमारन सीस नाय ॥१३॥
 तिन सुकुटनि करि ज्वाला उवाय, 'अस्मीकृत सर (?) सब हो तहाँय ।
 सब सुर जय कर तासु ओर, उर आनँद परम सु भक्ति सोर ॥१४॥
 तब प्रथम इन्द्र आदिक सुराय, कर भस्म बंदना सीस नाय ।
 कहते यह पुरुषोत्तम महान, वर धर्म तीर्थनाथक सुजान ॥ १५ ॥
 सो देखो अस्त भयो दिनेश, अब मिथ्यातम भ्रम कर प्रवेश ।
 ये प्राणी वृषतेँ विबुल होय, करके निज इच्छा मार्ग सोय ॥ १६ ॥
 जगमें सु प्रवर्तेँ विसाल, हमि पठित (?) सुरगन भक्ति माल ।
 अपनी पवित्र लखि अमरराय, पुनिकर पूजा निज धान जाय ॥१७॥
 तादिनेतेँ अब या भरत खेत, दीपकमौला प्रगटी उपेत ।
 प्रति वर्ष भव्य पूजा कराय, निर्वाँन समय उत्सव सु पाय ॥ १८ ॥

१ दीपमालिका दीवाली ।

पाछे खुनि नर नारिन समाज, कर मोदक ले परिवार साज ।
 भतिआनँद संगल निरत सोय, कीनो तिन अति ही कह सु कोय ॥१९॥
 ते सन्मति मति दे अरज येह, तुम करुनासागर धिमल मेह ।
 भटके बहु काल अनंत थादि, तुम यिन कृपालु जगमें अनादि ॥२०॥

भक्ति ।

या भव-वनके मांहि, बहुत दुःख पाइयो ।
 जानो ग्यान प्रसाद, तुमहिं तट आइयो ॥
 तातें कइने मांहि, कइ आवे नहीं ।
 वांछितार्थ पद तुम कर पाऊं प्रभु सही ॥ २१ ॥
 ॐ ह्री निर्वाणकल्याणकपासश्रीमहावीर निर्देन्द्राय पुर्णधिं निर्वाणीति स्वाहा ।

गीतिका छर ।

या भांति निर्वाणक सु पूजन, समयकी जो धिवि कही ।
 सो नय प्रमानके न्याय करि, भव्य तुम जानो सही ॥
 यद समय लखि जिन पूज उदसव, करत भक्ति जु वषा सही ।
 दुर्गति हरन सुख हेत भवि, करिये परम रुचि करम ही ॥ २२ ॥

दोहा ।
तीन बरस वसु मास दिन, पंद्रह रहे सु सार ।
महावीर शिवपुर बसे, चौथे काल मझार ॥ २३ ॥

त्रिभगी छद् ।
श्रीवीर जिनेसुर नमत सुरेसुर, वसु विधिकर जुग पद चरबंध ।
बहु तूर बजावै जिनगुन गावै, ध्यावै पावै सुक्ति पदं ॥ २४ ॥

इत्याशीर्वादः ।

(जाप्यं १०८ अष्टोत्तरशतं दीयते) ॐ ह्रीं निर्वाणमंगलमंडितमहावीरजिनेन्द्राय नमः ।

३ वर्तमान चतुर्विंशति जिन-निर्वाणभूमि पूजा ।

→→→→→

दोहा ।
मंगलकारी सर्व जिन, दाता परम चित्तारि ।
फलद रचाकर चित्त ह्रम, पूजत कर शिर धारि ॥ १ ॥

अट्टिल ।

दीप अड़ाई माहिं, मेरूपन सोभिते ।
पंथ विदेह सु भूमि, तहाँ मन क्षोभते ॥

तिन मधि तीर्थंकर, मंगल सुखदायजी ।
 होत सदा जहँ, इन्द्र जजै सिर नायजी ॥ २ ॥

गीतिका ।

सिर नाय सुर गन स्वग नरेसुर, करं महोत्सव नित नये ।
 परवार जुत भर पुण्य कोष, प्रतच्छ लखि श्रीजिन जये ॥
 विश्रंत केवल गनधरादिक, करत वर उपदेशते ।
 तहँ सुनहि अति रुचि धारि-भविजन, त्याग गृह तप करहि ते ॥ ३ ॥

अष्टम ।

काल चतुर्थम सार, सदा वरतै जहा ।
 यति श्रावक द्रष्ट धर्म, चलै सास्वत वहाँ ॥
 तीर्थाधिप चक्री, हल हरि प्रतिहरि घनै ।
 उपजै पुरुष अनूप, जहाँ शिष्यमग वनै ॥ ४ ॥

दोहा ।

जहाँ न मिथ्यामारगी, एक धरम अरुंत ।
 इंद्राविक आवें जहाँ, करं भक्ति भगवंत ॥ ५ ॥

भरतैरावत दस विषै, कालचक्र द्वैय जोग ।
तामधि जंबूद्वीप यह, दक्खिन भरत मनोग ॥१॥

अद्विष्ट ।

हम यह पंचम काल, पाय यह क्षेत्र सो ।
विद्यमान तीर्थंकर, मंगल नाहि सो ॥
तातें परम उछाह, सु मन वचसों रचौ ।
सिद्धभूमि थल पाय, हरष पूजा सुचौ ॥ ७ ॥

(पूजनके समय पहरनेके आमूषण ।)

गीतिका छंद ।

मणिसुकुट कुंडल हार कंठी, दामं सुकतादिकतनी ।
कर मांहि पहुंची कड़े सुंदरी, छुद्रघंटिक अति बनी ॥
यज्ञोपधीत सो पाँय धुंधरु, आदि आमूषण घनै ।
करि नव तिलक पट पहिर उज्ज्वल, चतुर नर पूजा ठनै ॥८॥

इत्युच्चार्ये निनचरणाम्नेषु परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

१ उत्सर्पणी भवसर्पणी, २ माला.

भट्टिक ।

वृषभनाथ जिन आदि, वीर परयंत जी ।
 षट्तर बीस इस क्षेत्र, भये भगवंत जी ॥
 कल्याणक तित्त सर्व, पूज्य हरि कर भये ।
 अब सिद्धालय माहिं, यहाँ जिन पूजये ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं वरुमानचतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र अवतरत अवतरत । संवौषट् ।
 आह्वानं अत्र तिष्ठत । ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत ।
 षषट् । सन्निधीकरणं ।

अष्टक ।

अद्विल्ल ।

कनक कलश दधि छोर, उदक निरमलहि लै ।
 इन्द्र जजै हम सकति नाहिं वह जल मिलै ॥
 तृषा निवारन हेत, जजौं हितकरि अदा ।
 कैलाशादिक थान, सुकति मारग सदा ॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति
स्वाहा ॥ १ ॥

मलयगिरि केशर कुंकुम, जल सोहिलौ ।

परम सुरभि लहि भँवर, करहिं तापर किलौ ॥

भव आताप निवारन कारन आनदा ॥ कैलाशादिक० ॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो भवातापविनाशनाय चंद्रनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

शशि सोती सम सालि, अखंडित वीनकै ।

परम सुगंधी उज्ज्वल, उत्सव चीनकै ॥

अक्षयपदके हेत जजौं जिन चरनदा ॥ कैलाशादिक० ॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिक निर्वाणक्षेत्रेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

सुमन स्वर्णमय सुरतरुके, सम त्यायकै ।

विविध प्रकार बनाय, सुगंध मिलायकै ॥

मन्मथदाहि निवारि जजौं जिन पुष्पदा ॥ कैलाशादिक० ॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

१ सुगंध । २ किलोल-भानंद ।

धाधर पुरी पिराक, तुरत घृतमें कड़े ।

बहुत खुगंध लखत, उरमें आनंद अड़े ॥

धुधानिवारन कंचन थार लम्हारदा ॥ कैलाशादिक० ॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

अणिमथ कंचन जड़ित, दीप अति सोहने ।

बहु खुगंध नहिं धूम, लखत मनसोहने ॥

तिभिरचिनाशक दीपक लै पूजां सदा ॥ कैलाशादिक० ॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

चदन अगर कपूर, आदि दस छूटकें ।

खुरभिसार अलि, मत्त जुरे कर दूटकें ॥

करम दहनके हेत, धूप वर खेइदा ॥ कैलाशादिक० ॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

खारक दाख लवंग, लायची आनित्रे ।

१ मोरा ।

श्रीफल वर वादाम, जायफल जानिगे ॥
 ये फल रूपन रहित, सुकृति-फल हेतदा ॥ कैलाशादिक० ॥
 ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वापमीति स्वाहा ॥८॥
 वारि सुगंध सुरल, पट्टप चरु धोयके ।
 दीप द्रुप फल वसु, विधि अर्घ्य संजोयके ॥
 गच्छि विधि अर्घ्य संजोय, स्वपर हित ज्ञानदा ॥कैलाशादिक०॥
 ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्योऽर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वापमीति स्वाहा ॥९॥

तत्त चित्तत घन सुषिर, सानि वाजिन स्रथे ।
 अगलनीत उचारि, नारि नर मिल तथै ॥
 सुचि कर स्रथ लिगार, जज्ञौ विषसं तदा ॥ कैलाशादिक० ॥
 ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्योऽनव्यंपदप्राप्तये पूर्णांघ्रिं निर्वापमीति स्वाहा ॥१०॥

गाथा ।

अहावथस्मि लसहा, चंपाए वासुपुब्बजिणणाहो ।
 उज्जते णेस्सिजिणो, पावाए णिव्वुदो महावीरो ॥

अद्विल्ल ।

अष्टापद आदीश, ईश जगतारजी ।
वासुपूज्य चंपापुर, परम उदारजी ॥
नेमिनाथ गिरनार, धीर पावापुरी ।

सुकृति गमन इन थान, नमन तिन भित्तकरी ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं यथाक्रमसिद्धपदमाप्तवासुपूज्यनेमिनाथमहावीरजिनेन्द्रेभ्योऽनर्घ्यपदमाप्तये अर्घ्ये
निर्वपामीति स्वाहा ॥
गाथा ।

धीसं तु जिणवरिंदा, अमरासुरवंदिदा धुदकिलेसा ।
सम्मैदे गिरिसिहरे, णिव्वाणगया गमो तेसिं ॥

अद्विल्ल ।

अजितनाथ जिन आदि, जिनेद्वर बीसजी ।
अमर असुरगन जिनपद, नावत सीसजी ॥
गिरि सम्मैदशिलरतं, लोकशिखर गये ।

तिनि जिनवर उर द्वाध, नाथ सिह जय जये ॥ १२ ॥
ॐ ह्रीं सम्मैदाचलानिर्माणपदमाप्तवीर्थक्रेभ्योऽनर्घ्यपदमाप्तयेऽर्घ्ये निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला ।

दोहा ।

शिवथल जन्मन मास तिथि, नाम सवनि सुखकार ।
वरनन सुरभि सु लुब्ध चित, भयो त्रमर आकार ॥ १ ॥

पवरी छद ।

जय नइवभदेव कैलाश सीस, वदि माधि चतुर्दशि सुकति ईस ।
धंपापुर द्वादशभें जिनेश, भादों सुदि पंचमि तिथि सुदेस ॥२॥
गिरनार नेमि जिन सुकतिथान, आषाढ सुदी आठें महान ।

पाषापुरतें प्रसु धीरनाथ, कातिक वदि चौदस प्रनमि माथ ॥ ३ ॥
पुनि शिखर सम्भेद लतंग स्त्रीस, तहें अति पवित्र वर कूट बीस ।
तिनके अब ग्रंथप्रमान नाम । भाषों जिन सुक्तिकरन सुठाम ॥४॥

जय चैत्र शुक्ल पंचमि महेश, सम्भेदशिखर आये सुरेश ॥ ५ ॥

जय धवलवत्त गिरि शोभनीक, जिन संभव शिवतिय वरी ठीक ।

जय चैत्र सुदी छठ दिन नरेश, सम्भेदशिखर आये सुरेश ॥ ६ ॥

जय आनंदकूट महा मनोग, लहि अभिन्दन शिवनारि जोग ।
 जय छठ वैशाख शुक्ल सुदेश, सम्भेदशिखर आये सुरेश ॥ ७ ॥
 अथ अचल नाम जयकूट सार, जिन सुमति भये भव-उदधि पार ।
 जय चैत सुदी ग्यारस महेश, सम्भेदशिखर आये सुरेश ॥ ८ ॥
 जय मोहनकूट सम्भेद शील, पदमाप्रसु सुक्त भये जगीश ।
 जय फागुन सुदि सातें नरेश, सम्भेदशिखर आये सुरेश ॥ ९ ॥
 जय वर प्रभासनाथा सु कूट, तहेंते सुपार्व प्रसु करम दूट ।
 जय फागुन सुदि सातें सुदेश, सम्भेदशिखर आये सुरेश ॥ १० ॥
 जय ललितकूट प्रसु परम ठाम, चंदाप्रसु लहि तहों सुकृतिधाम ।
 भादों सुदि वर सातें सुदेश, सम्भेदशिखर आये सुरेश ॥ ११ ॥
 जय सुप्रभकूट पूंजं महेश, जय जुपदंत हम हर कलेश ।
 जय भादों सुदि नवमी सुरेश, सम्भेदशिखर आये सुरेश ॥ १२ ॥
 विद्युतवर कूट पादत्र थान, हनि शीतलप्रसु तहों कर्म मान ।
 आश्विन सुदि त्रिथि एका सुदेश, सम्भेदशिखर आये सुरेश ॥ १३ ॥

जय संकुलनामा कूट तास, श्रेयांस कियो जग सीस वास ।
आवन सुदि बारस कहि तिथेस, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ १४ ॥
जय वीर सु संकुल नाम तास, लहि विमल विमल पद ताहि पास ।
जाय मुदि अपाढ़ आठें महेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ १५ ॥
जय नाल स्वयंभू कूट वेश, शिखरि अनंत वरी जिनेश ।
सुदि छादश चैत महा सुदेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ १६ ॥
जय सीरीदत्त वर कूट जास, गति पंचम श्रीजिन धर्म पास ॥
अति चैत अभावस तहँ नरेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ १७ ॥
जय शांतप्रभासी कूट जेह, जिन शांति जगत शिवपुर वसेह ।
जय लेठ अन्न मू तिथि सुदेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ १८ ॥
जय कूट ग्यानधर खरस ठौर, प्रभु कुंथु भये प्रयशुवन मौर ।
जय वदि वैशाख प्रथम दिनेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ १९ ॥
जय नाटककूट समेद शीस, जय अरहनाथ हुव मुक्ति ईश ।
जय चैत अभावस तिथि सुदेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ २० ॥

जय संवलकूट पवित्र धान, हनि महि मह कर्मन प्रमान ।
 जय फागुन सुदि पंचमि प्रवेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ २१ ॥
 जय निर्जरकूट पवित्र गाय, सुनिखुन्नत सुकति-वधू रमाय ।
 फागुन वदि बारस सो दिनेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ २२ ॥
 जय कूट मित्रधर परम ठाम, नमिनाथ पधारे सुकति घाम ।
 जय सुदि वैशाख चतुर्दसेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ २३ ॥
 जय कूट सुवर्नसुभद्र नाम, प्रभु पारस तजि सब जगत काम ।
 जय सावन सुदि सातें खगेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ २४ ॥
 शिवागमन समय इनको बखान, अनुकृष्ण लखि अंशुहि नाम जान ।
 शिव प्रथम दुतिय चौथे जिनेश, पंचम सप्तम वसुधें प्रवेश ॥ २५ ॥
 व.समें ग्यारस ग्रे जगनदेव । पूर्यहि समय शिवमार्ग लेव ।
 पुनि बारस तेरस चौदमीस, पोटस सत्रग उनईग धीस ॥ २६ ॥
 बावीसम तेवीसम जिनेस, जे राल समय शिव कर प्रवेश ।
 अत्रिए नवमें छठमें जिहुक्त, ये दिनेके पिछले पहर सुक्त ॥ २७ ॥

जय पंद्रम जिन जु अठारमेध, इकईसम वीर जिनेश सेय ।
 इनकी अखनोदय बेल सार, जिन मुकृतिवधू संग मिलनकार ॥२८॥
 जय वृषभ नेमि अरु वासुधूल्य, पद्मासन शिव लहि लगत सूर्ज ।
 अवशेष ऊर्ध्व आसन प्रवीन, निर्वानपुरी जिन गमन कीन ॥२९॥

सोरठा ।

मोह प्रबल गढ़ तोर, सकल करम रिपु मारियौ ।
 लोक शिखरकी ओर, गमन कियो अविचल भये ॥३०॥
 ॐ ह्रीं सिद्धपद्मप्राप्तवर्तमानजिनेन्द्रेभ्योऽनर्ध्वपद्मप्राप्तये पूर्णधे निर्वपामीति स्वाहा ।
 चंद्रवार जो कोथ, बंदे नर सुरपद लेंहे ।
 'जगतराम' हित जोय, सिद्धक्षेत्र पूजे सदा ॥ ३१ ॥

इत्याशीमदिः ।

(आप्यं १०८ दीयते) ॐ ह्रीं वर्तमानकालसंम्वधिचतुर्विंशतिजिनेन्द्राय नमः ।

१ जिस विधि और जिस समय जिस कूटसे जिन तीर्थकर प्रभुने मुक्ति पाई है । उन्हीं विधिसे उसी समय उन्हीं कूटपर उन्हीं तीर्थकर प्रभुकी प्रजा वन्दनाका यह उत्कृष्ट माहात्म्य बतलाया है ।

पूर्वाह्न समय ।

८ तीर्थंकर मोक्ष पद्यारे

१ ऋषभनाथ

२ अबितनाथ

३ अभितन्दननाथ

४ सुमतिनाथ

५ सुपार्श्वनाथ

६ चन्द्रप्रभ

७ शीतलनाथ

८ श्रेयांसनाथ

रात्रिके समय

९ तीर्थंकर मोक्ष पद्यारे

१ वांसुपुज्य

२ विमलनाथ

३ अनंतनाथ

४ शान्तिनाथ

५ कुन्थुनाथ

६ मल्लिनाथ

७ मुनिमुद्यत

८ नेमिनाथ

९ पार्श्वनाथ

दिनकेपिच्छलेपहर

१ तीर्थंकर मोक्ष पद्यारे

१ संभवनाथ

२ पुण्यदंत

३ पद्मप्रभ

सूर्योदयके समय

४ तीर्थंकर मोक्ष पद्यारे

१ धर्मनाथ

२ अरहनाथ

३ नमिनाथ

४ महावीर

४ प्रत्येक निर्वाण पूजा ।

दोहा ।

तीर्थकर भगवानके, बंदों पंच कल्याण ।
अतिशय ठाम मनोग सब, बंदों सिर धरि पौन ॥ १ ॥

द्वार—('ते साधु मेरे उर बसो')

साधु जहाँ निज ध्यान धरि, पावें सु केवलग्यान ।
बंदों सु ठौर प्रशस्त जो, तीरथ प्रधान जहान ॥ ते साधु ॥
जा थान सो केवलपुरी, निरवान पहुँचे जान ।
पूजों सु थान पुनीत जो, जा सम सु थान न आनै ॥ ते साधु ॥

ॐ ह्री वृत्तमानकालसम्बन्धिजिनेन्द्राद्यमसंख्यातमुनियः अत्र अवतरत अवतरत संवैषट् ।
आह्वाननं । अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः । स्थापनं । अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।
सन्निधीकरण ।

१ मस्तकसे हाथ जोड़कर, २ अन्य ।

अष्टक ।

(द्वार कार्तिकिकी)

प्राणी उज्ज्वल जल मुनि चित्त सौ, सुंवे सपरस बिन कर धार हो ।

प्राणी हाटकै घट भर ल्याइये, जिन मुनिगन पूजनकार हो ॥

प्राणी सिद्ध-भूमि थल पायकै, अरु अतिशय संगल ठाम हो ।

भवि परम लछाह सुधारकै, जिन मुनिपद पूजनकार हो ।

प्राणी सिद्धभूमि थल पायकै ॥

ॐ ह्रीं प्रत्येक निर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

प्राणी चंदन सर सम सीतलो, वर केशर कुमकुम गार हो ।

प्राणी भव आताप निवारिकै, जिन मुनिगन पूजनकार हो । प्राणी० ॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकं निर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

प्राणी कुंदकली समशालि ले, भर बीन अलंछित थार हो ।

प्राणी आस असैपद कारने, जिन मुनिगन पूजनकार हो ॥ प्राणी० ॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

१ बिना धातुको कुभा दुभा, २ सोना ।

प्राणी परम सुगंधी फूल ले, पुनि परख प्रछाल सौ आन हो ।
प्राणी कामदहनके कारने, जिन मुनिगन पूजनकार हो ॥ प्राणी० ॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो घृष्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

प्राणी सोदक खाजे आदि जे, पकवान विविध मनहार हो ।
प्राणी कंचन धार संजोयके, जिन मुनिगन पूजनकार हो ॥ प्राणी सि० ॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशय क्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

प्राणी दीपक जोति सुहावनी, जिमि रतन अमोलक सार हो ।
प्राणी कर धरि परम उछाह सों, जिन मुनिगन पूजनकार हो ॥ प्रा० ॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

प्राणी गंध सहित वर धूपले, पावक मह खेवनसार हो ।
प्राणी अशुभ करम अरि जारने, जिन मुनिगन पूजनकार हो ॥ प्रा० ॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो घृष्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

प्राणी दाख लवग सु लायची, पिस्तादिक आम अनार हो ।
प्राणी अजर अमरपद कारने, जिन मुनिगन पूजनकार हो ॥ प्रा० ॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

प्राणी जल फलादि वसु द्रव्य ले, कर कनक रक्तेषी धार हो ।
प्राणी निरवांक्षिक जिन जोयकें, जिनं सुनिगन पूजनकार हो ॥प्रा०॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

सोरठा ।

उत्तम भाव उपाय, श्रीजिन तीरथ वंदना ।

कीजें मन वच काय, नय प्रमानकें न्याय कर ॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

प्रत्येक अर्घ ।

गाथा ।

वरदत्तो य वरंगो, सायरदत्तो य तारवरणयरे ।

आहुद्वयकोडाओ, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

गीतिका छंद ।

वरदत्त और वरंग साह्व, और सायरदत्तजी ।

इन आदि साडे तीन कोडा, सुनी हर दुख सत्तजी ॥

तारवर नगर समीपतें वसु, कर्म दहि शिवपद लयौ ।
जल आदि अर्घ बनाय तिन, उर वार हम पूजन ठयौ ॥१॥

ॐ ह्री श्रीवरदत्त-अनंगकुमारसायरदत्तादिपंचाशच्छक्तोद्वित्रयमुनीनां निर्वाण.स्पद-
श्रीतारंगसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

गाथा ।

णेमिसामि पञ्जणो, संयुक्तुमारो तहेव अणिरुद्धो ।
बाहत्तरिकोडिओ, उज्जंते सत्तसया सिद्धा ॥

गीतिका ।

श्रीनेमिनाथ प्रदुस्रजी अरु, संयुक्तुमर दघालजी ।
अनुरुद्ध सुनि इत्यादि जे, षट्-कायके रखपालजी ॥
सातसै बहत्तर कोडि सुनि, गिरनारतें शिवपद लयौ ।
जल आदि अर्घ बनाय तिन, उर धारि हम पूजन ठयौ ॥२॥

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथ-प्रदुस्र-शंयुक्तुमार-अनुरुद्धादिसुनीनां सप्तशतकोत्तरद्वासप्तति-
कोटिसंख्यानां श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

गाथा ।

रामसुखा वेणिजणा, लाडणरिंदाण पंच कोडीओ ।
पावागिरिवरसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

चौपद ।

जुगल रामसुत कर्मणि घात, लाड देस नृप आदि चिख्यात ।
पाँच कोडि पावागिर सीस, सुकति गये बंदों तिन ईस ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं श्रीरामचन्द्रस्य लाङ्गनेन्द्रपुत्रद्वयादिमुनीनां पंचकोटिप्रसितानां निर्वाणारपद
श्रीपावागदुसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

गाथा ।

पंडुसुखा तिणिजणा, दविडणरिंदाण अट्टकोडीओ ।
सेत्तुजयगिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

छंद, मात्रा २० ।

पांडु सुत तीन नृप देश ब्राविड सो तने ।
आदि वसु कोडि सुनि तरन तारन भने ॥

सीस सेतुं जघगिरितें परमपद लयौ ।
तिनहि ह्यम मन वचनकर सु पूजन ठयौ ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीयुधिष्ठिर-भीम-अर्जुनादिमुनीनां वसुकोटिप्रमितानां निर्वाणास्पदश्रीशशुं जय
सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

गाथा ।

संते जे बलभद्रा, जडुधणरिंदाण अड्डकोडीओ ।
गजपंथेगिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

छंद मात्रा २० ।

सात बलभद्र अरु नृपति जडुवंशिधे ।
आदि वसु कोडि मुनि करम विध्वंसये ॥
सीम गजपथगिरितें परमपद लयौ ।
तिनहि हम मन वचन कायकर सिर नयौ ॥
ॐ ह्रीं श्री बलभद्रादिवसुकोटिप्रमितमुनीनां श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो- अर्घं
निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

गाथा ।

राम हणू सुग्रीओ, गवयगवाक्खो य णीलमहाणिलो ।
गवणवदीकोडीओ, तुंगीगिरिणिण्वुदे वंदे ॥

बार भरथरीकी ।

राम हनू सुग्रीवजी, अरु गवय गवहय नल अवर महानील जी ।
दन अ गदिक दक्ष, तेगुरु पूजौं भावसों जी, निन्धानवे कोडीक ॥
तुंगीगिरि शिवपद लेहक, तिनको कर जोडा, ते गुरु पूजौं भावसों जी ॥१॥

अ^० हीं श्रीराम-हनूमन्तकुमार-सुग्रीव-सुडील-गव-गवाक्ष-नील-महानील-कुमारा
दि नवनर्था तैकोटिममितसुनीनां श्रीसांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

गाथा ।

पंगणंगकुमारा, कोडीपंचहसुणिवरा सहिया ।
सुवणागिरिवरसिहरे, णिव्वाणगया गमो तेसिं ॥
चौपई ।

नंगानंग कुवर जुग भास, पौंच कोडि अरु लाल पचास ।
सिवनागिरि चडि लहि भवतीर, तिनहिं नमन हम करत सुवीर ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीनंगानंगकुमारादिसार्द्धपंचकोटिसुनीनां श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं
निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

गाथा ।

दहसुहृदरायस्य सुखा, कोडीपंचदशसुखिवरा सहिया ।
रेवाउहृदयतडग्ने, पिन्वाणगया णमो तेसि ॥

चौपाही ।

दससुख राय तने सुत और, सडि पाच कोडि सुनि जोर ।
रेवानक्षी डभग्र तद पाय, सुकृति गये बंदौं सिर नाय ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री रावणपुत्रादिसार्द्धपंचकोटिप्रमितानांसुनीनां निर्वाणास्पद श्रीरेवारोषो-
भ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

गाथा ।

रेवाणहए तीरे, पच्छिमआयम्भि सिद्धवरकूडे ।
दो चक्की दह कप्पे, आहुहुयकोडिणिब्बुदे वंदे ॥

डार 'ते साधु मेरे हर नसो' ।

रेवानक्षी रत भाग पश्चिम, सिद्धवर तहें कूट ।

दो चक्रवर्त्ति अनंगी दस, तहँतें करम अरि छूट ॥

इन आदि साडे तीन कोडि, सुनीश शिवपद पाष ।

जल आदि अर्घ बनाय तिन, उरधार मगल गाय ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचक्रिचर्त्तिद्वयकामदेवदगक्कादिसाईत्रयकोटिमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यो रेवान-
दीपश्रिमदिरमागस्यसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

गाथा ।

बडवाणीवरणयरे, दक्षिणभायभिम चूलगिरिसिहरे ।

इंदजीद कुंभयणो, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

चौपाई ।

बडवाणी बडनयर सुहाई, दक्षिण भाग चूलगिरि गाई ।

इन्द्रजीत वटकरन तहँतें, सुकति गधे हस नमत यहँतें ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्रीइन्द्रजीतकुंभकर्णयोनिर्वाणास्पदेभ्यो वडनगरबडवानीग्रामयोदक्षिणदिग्भास्य-
चूलगिरिःसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

१ कामदेव । २ कुंगर्ण ।

गाथा ।

पावागिरिवरसिद्धरे, सुवण्णभद्राहसुणिवरा चडरो ।
चलणाणईतडगगे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

गीतिका छंद ।

वरनगर निकट उत्तंग परवत, नाम पावागिरि परो ।
ताके समीप सु नदी चलना, नाम तट ताको धरो ॥
वर ध्यान सुनिवर चार सुवरन, -भद्र आदि महान जो ।
लहि सुकृतिथान अनंत सुख, निनकों त्रिकाल प्रनाम जो ॥११॥
ॐ ह्रीं श्रीसुवरणभद्रादिचतुर्णां मृतीनां निर्वाणास्पदेभ्यः पावागदशिवरेभ्योऽ
थवाचलनाजदीतदेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्धं निर्वापमीति स्वाहा ॥ ११ ॥

गाथा ।

फलहोडीधरगामे, पच्छिमभायस्मि द्योणगिरिसिद्धरे ।
गुरुदत्ताहसुणिदा, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

(बाल परमादीनी ।)

फलहोडी वर आम, पच्छिम दिशिके माहीं ।
दोनागिरिवर नाम, पर्वतके सिर ताहीं ॥

गुरुदत्तादि सुनीश, पंचमगति तर्ह पाई ।

तिनि सुनिकों कर जोर, पूजत अर्घ बनार्ह ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं श्रीगुरुदत्तादिमुनीनां निर्वाणस्पदश्रीफलहोडीचण्डग्रामपश्चिमदिग्भागस्थ-
द्रोणानिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निवंपामीति स्वाहा ॥ १२ ॥

गाथा ।

णायकुमारसुणिंदो, बालि महाबालि चैव अज्ज्ञेया ।
अट्टावयगिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

बार परमादीनी ।

नागकुमार सुनिंद, व्याल महाव्यालजी ।
छेद अभेद रिपिंद, तिन गुन-माल सुधार जी ॥
गिरि कैलाश महान, लु अखरतें परनी ।

शिवरमनी सुखकार, वंदत तिन नित करनी ॥ १३ ॥
ॐ ह्रीं श्रीबाल-महाबाल-नागकुमारादिमुनीना श्रीकैलाशसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निवंपामीति स्वाहा ॥ १३ ॥

१ ऋषियोगे प्रधान ।

गाथा ।

अचलपुरवरणपरै, ईसाणे भाए मेढगिरिसिहरे ।
आहुडैयकोडीओ, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

छंद पद्वरी ।

अचलापुरकी दिशि है ईशान, गिरि मेरुशिखर धर परम ध्यान ।
आहुठकौडि सुनि मोक्ष पाय, तिनकों त्रिकाल हम शीस नाय ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं साहंनयकोटिसुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यो अचलापुरप्रामस्य ईशानदिभागस्थश्री-
मुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४ ॥

गाथा ।

वंसस्थलवरणियरे, पच्छिमभायस्मि कुंथुगिरिसिहरे ।
कुलदेसभूसणभुणी, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

ढार जोगीराइझाकी ।

वनससथलपुर निकट मनोहर, पच्छिम भाग दिशामें ।
नाम कुंथगिरि शिखर तहों वर, करम कुलाचल भाने ।

१ साहे तीन करोड़ ।

कुलभूषण दिशभूषण स्वामी, घरस दिगम्बर धारी ।

जोग निरोध परमपद पाथो, तिनहिं प्रनाम हमारी ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुलभूषण-देशभूषणमुनीनां निर्वाणास्पदवंशस्थलगिरिपश्चिमदिग्भागस्थ-
कुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५ ॥

गाथा ।

जखरहरायसस खुआ, पंचमयाइं कलिंगदेसम्भि ।

कोडिसिलाकेडिसुणी, गिन्वाणगया णमो तेसिं ॥

सुन्दरी छन्द ।

नृप जशोधरके सुत पाँचसै, सरस देश कलिंग विषै लसै ।

रुचिर कोटिशिला सुनि कोटिजे, सुकति गथे तिन्हें कर जोडजे ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं यशोधरपुत्रस्य कलिङ्गदेशीय पञ्चशतकभूपत्यादिकोटिप्रमितमुनीनां च निर्वाणा-
स्पदकोटिशिलासिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६ ॥

गाथा ।

पाससस समवसरणे, सहिया वरदत्त सुणिवरा पंच ।

रिसिंदेगिरिसिहरे, गिन्वाणगया णमो तेसिं ॥

अदिक ।

समोशरण वर सहित, पादूर्वलिनदेव जी ।

रेसंदीगिरि आये, पर्वत तेवर्जा ।

श्रीवरदत्त आदि सुनि, - राज तहों गये ।

निर्वानक ते साध, पूज त्रय जग यह ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवरदत्तादिपञ्चऋषीश्वराणां निर्वाणास्पदश्रीरसनादेगिरि (नयनागिरि)
सिद्धक्षेत्रेभ्यो षर्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७ ॥

चौपाई ।

निःवृत्ति जीवन जेह प्रमान, चतुरधीस जिन आदि बखान ।

दोसै साङ्गे चौदा कोङ्कि, द्वादश शतक इक्यासी जोङ्कि ॥ १८ ॥

और असंख्य परम ऋषिराज, लोकाशिखर लहि तजि जग काज ।

इस ही भरतक्षेत्रतें वीर, तिनहिं चितारि जजत हम धीर ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थकरादिद्वादशशतैकाशीत्युत्तरद्विशतसार्धचतुर्दशकोटिमुख्यमु-
नीनामन्येषां चासंख्यातमुनिवराणां सिद्धक्षेत्रेभ्योऽर्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८ ॥

सुन्दरी उन्द ।

सरस गायनके अनुसार जी, परम महा लघु वरननकार जी ।
अवर जिन शासन अनुसारजे, सुनि समूह जजौं वर धारजे ॥२०॥

दीहा ।

पाटलिपुरके निकटतें, सेठ सुदर्शन सार ।
पायो अचिचल ठाम जहँ, सुख अनंत अविकार ॥ २१ ॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनश्रेष्ठिनः निर्वाणास्पदपाटलिपुत्रस्थारामसिद्धक्षेत्रम्भ्यो अर्घं निर्वपा-
मीति स्वाहा ॥ १९ ॥

अद्विष्ट ।

जल गत थल गत सरित, उदाधिगत जानिये ।
परवतगत सिद्धनिके, थोक प्रमानिये ॥
कुल गिरिवर गत नाभ, कुधर गत जीतये ।
कंचनगिरि गत जे, शिखलोकं विषे ठये ॥ २२ ॥
कुंड-द्रहनि गत, वन उपवन गत, सार ये ।
गिरि गर्भनतें गत भव, एक सिधारये ॥

सब नरथलतें, शिवपद पायो सार जू ।

सिद्धसमूह चितार जौं, डर धारजू ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वक्षेत्रसम्बन्धयनेकमुनिवराणां सिद्धक्षेत्रभ्यः पूर्णधिं निर्वपामीति स्वाहा ॥९८॥

५ अतिशयक्षेत्र पूजा ।

गाथा ।

पासं तह अहिणंदण णायद्धहि मंगलाडरे वंदे ।
अस्सारमे पट्टणि, सुणिसुव्वओ तदेव वंदामि ॥

गीतीका छंद ।

श्रीपार्श्वनाथ जिनेशकौ जिमि, त्योंहि अभिनन्दनहिंको ।
आयो समवसूत मंगलापुर, शोभ सो कवि कहिय को ॥
तातें डभै जिन मंगलापुर, बंदि मन वच तन तहाँ ।
आशारमे पट्टन विषै, समशरन सुनिसोव्रत जहाँ ॥ १ ॥

१ मसुध लोक्के ।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाभिनन्दनयोः समवशरणास्पदमंगलापुरक्षेत्राय मुनिसुव्रतस्य समव-
शरणास्पदाशारथ्यपट्टनक्षेत्राय चार्धं निर्बपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

गाथा ।

बाहूबलि तह चंदमि, पोयणपुरहत्थिणापुरं वंदे ।
संती कुंथुव अरिहो, वाणारसिए सुपासपासं च ॥

बाल सीमधरजीकी वंदनाढी ।

पोदनपुर बाहूबली बंदामी हो, शांति कुंथु अरनाथ ।
हस्तिनागपुर तीन जिन बंदामी हो, अष्टांगी नय माथ ॥
पुनि नगर बनारस धियै हो, जिन पारस और सुपार्श्वजी ।
बंदहु त्रिबिधि त्रिकाल भव हो, हरहु पीर कृपालजी ॥
भगवान ईश्वर सुगत विष्णू, श्रीजिन विपुल अपार जी ।
जिन नाम इन्द्र धरनेन्द्र चक्री, भक्ती करहिं महान जी ॥२॥

ॐ ह्रीं बाहुबलिचरणाश्रितपोदनपुराय, शान्तिकुन्धु-अरहचरणस्पथितहस्तिनागपुराय,
सुपार्श्वपार्श्वपदाश्रितवारणसीक्षेत्राय चार्धं निर्बपामीति स्वाहा ॥२॥

गाथा ।

मथुराए अहिच्छित्तै, चौरं पासं तहेव वंदामि ।
जंबुसुणिंदो वंदे, णिव्वुइपत्तोबि जंबुवणगहणे ॥

पद्दरी छंद ।

मथुरा अहिक्षेत्र महाविशाल, महावीर पापूर्वं व्यंदो त्रिकाल ।
जामुनके धन तहें वन सु ठान, शिव पाय जम्बु मुनिवर प्रमान ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं पार्वनाथमहावीरचरणस्पर्शितमथुराहिक्षेत्राभ्यां जम्बूनाम्नोऽन्तिमकेवलिनो
निर्वाणास्पदक्षेत्राय मथुरानिकटे यमुनावनाय च अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

गाथा ।

पंचकलाणठाणई, जाणवि सँजादमच्चलयम्मि ।
मणवयणकायसुद्धी, सव्वे सिरसा णमँस्सामि ॥
चौणई ।

इस वर मनुष लोकके माहि, पंच कल्याण ठाम जे पाहिं ।
सर्व तीर्थ मन वच तन धयाय, ते थल पूजौं अर्घ बनाय ॥ ४ ॥

१ सयन-बहुतसे ।

ॐ ह्रीं अर्धद्वितीयद्गीपेषु सप्तस्युत्तरशतार्थक्षेत्रेषु यानि यानि पंचकल्याणक संयुक्त
स्थानानि तेभ्यः सर्वेभ्योऽर्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

गाथा ।

अग्गलदेवं वंदमि, वरणपरं णियडकुंडली वंदे ।
पासं सिवपुरि वंदमि, होलगिरि संखदेवस्मि ॥

भुजगी छंद ।

वरनगर तीऊन कुंडन विषै, अग्गलदेव श्रीआदि देवानके नाथ हैं ।
तिनहिं पग वंदि अरु पार्वर्ज्जी वंदि पुनि, शिवपुर विचै वंदि जोर हाथ हैं ॥
और होल्लघगिरि नाम पर्वत जहाँ, संखदेवस्मि कहिये जगन्नाथ हैं ।
संख वर चिन्ह संजुक्ति श्रीनेमिप्रभु, तिनहि पग वंदि कर जोर जुग हाथ हैं ॥

ॐ ह्रीं आदिनाथपदाकितवरनगरक्षेत्राय, पार्वर्नाथपदाश्रितशिवपुरक्षेत्राय, संख
चिह्नमंयुक्तनेमिनाथचरणस्पशितहोलगिरियेऽर्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

गाथा ।

गोमटदेवं वंदमि, पंचसयं धणुहदेहउच्चतं ।
देवा कुणंति बुडी, केसरिकुसुमाण तरस उवरिस्मि ॥

चौर्ध्व ।

गोमटेदेव शरीर उँचाई, धनुष पाँचसै, सूर बरसाई ।
 ऊपर केशर कुसुम महान, बंदो तिनहिँ जोर जुग पान ॥६॥
 ॐ ह्रीं पंचविंशत्युत्तरपंचशतधनुःकायविराजितगोमटेदेवपदाश्रितगोमटेक्षेत्राय अर्घ
 निर्बषामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

गार्था ।

णिन्वाणंठाण जाणिवि, अइसयथाणाणि अहसए सहिया ।
 संजादमिच्चलोए, सब्बे सिरसा णमँस्सामि ॥

सोरठा ।

जे निर्वान सु ठाम, अतिशय ठाम मनोग जे ।
 पुनि अतिशय जुत ठाम, मध्य लोक सब तीर्थ नमि ॥ ७ ॥
 ॐ ह्रीं अस्मिन् मन्थलोके यानि निर्वाणक्षेत्राणि अतिशयक्षेत्राणि च संजातानि तेभ्यः
 सर्वेभ्योऽर्घं निर्बषामीति स्वाहा ॥७॥

१ देवताओंके केशरकी वर्षा की ।

पाँच प्रकारके केवलियोंकी अर्चना ।

हरिगीत ।

सर्वज्ञ विश्व पदार्थ ज्ञायक, समोशरन जो अवनि तैं ।
 चउकाल अथवा इन्द्र गनधर, सभानायक प्रसन तैं ॥
 उचरंत दिव्यध्वनि अनक्षर, आदि अतिशय जहँ घने ।
 सातिशयकेवलि श्रीजिनेश्वर, तिनहिं हम पूजन ठने ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनसुलवीर्योद्यनन्तगुणमण्डितैभ्यः सातिशयकेवलिजिनेभ्योऽर्घं निर्वे-
 पामीति स्वाहा ॥८॥

शाल जोगीरासाकी ।

थिति उतकृष्टी कीटि पूरवमें, आठ बरस घट भाई ।
 बंध प्रकृति जे सर्व नाशि इक, सातावेदनि पाई ॥
 सप्त प्रकृति पचासीकी भनि, उदय बयालिस धारी ।
 लेइया शुकल ध्यान पद त्रितिये, परमानंद पदकारी ॥९ ॥

१-भतिशय सहित ।

आठ लाख पुनि सहस्र अठानवे, पाँचसै दोय बखाने ।
 हैं उटकृष्ट सजोगकेवली; तेरहवें गुन ठाने ॥
 जहँ नव क्षायक लब्धि अधिक हो, दोष अठारह भाने ।
 सुरकृत गंधकुटी निर अतिशय, -केवलि जिन सो ठाने ॥१०॥
 ॐ ही अनन्तदर्शनाद्यनन्तगुणमण्डितनिरतिशयकेवलजिनेभ्योऽर्थं निर्वपामीति स्वाहा ॥९

गीतिका छन्द ।

सुरनर पशू करकें तथा, स्वयमेव ही प्रापति भयो ।
 अति धीर वीर महा उपद्रव, जीत केवलि-पद ठयो ॥
 इक समयमें इक वार ही लखि, सकल लोक अलोकने ।
 उपसर्गकेवलि चरम तन धर, तिनहि हम पूजन ठने ॥११॥
 ॐ ही उपसर्गप्राप्तये केवलजिनेभ्योऽर्थं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

गीतिका ।

उपसर्ग दुद्धर पाय अन्तसुहूर्तमें कर्म घातिया ।
 कर अंत केवलज्ञान ले पुनि, शेष कर्म विनाशिया ॥

लहि सुक्ति ज्ञाने अंतकृत-केवलि परमगुरु गुन भजै ।
जे एक तीर्थकर समय जो होय दस दर्शन जजै ॥१२॥

ॐ ह्रीं अस्सकैवलिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥११॥

गीतिका ।

जे ज्ञान पंचम धारि, पै उपदेश प्रभु नाही करे ।

ते मूककेवलि जानि तिन, पूजन सकल भव अघ हरे ॥

यह कथन 'सामायिक सु पाटी' देख टीकाके विषे ।

सुनि और जैन विशेष श्रुत कर, ठीक बुधि इहठा लिखै ॥१३॥

ॐ ह्रीं मूककेवलिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१२॥

जयमाला ।

दोहा ।

पंच परम जिन-गिरी, रत्नत्रय वृष घेहि ।
आचारादिक सुनि सबै, इन ही को प्रणमेहि ॥१॥

मे गद सर्व प्रकार ही, पूजित लोक मंत्रार ।
हनका विनय विचार कर, पुनि जयमाल उचार ॥२॥

पद्वरी छद ।

प्रनमामि परम शुरु नगनवंत, जे मूलोत्तर गुन धरन संत ।
बावीस परीपह सहत शूर, गिरि शिर तरुतल सर तीर पूर ॥३॥
लखि जगत अथिर निजनिंद मूल, सुख दुख तुन धन अरि मित्र तूल ।
जिन आतस लीन विरक्त देह, जे सुक्ति-बधू उरवधर सनेह ॥४॥
जे दो विधि संजम धरन धीर, जे द्वादश तप तप तपत वीर ।
जे त्रीदश विधि चारित्र धारि, ते साधु नमों उर गुन चितारि ॥५॥
जे मास दोय चव षट प्रजंतै, कचलौच करें निज कर महंत ।
जिनके व्रत मंत्रनतैं सु न्हान, जे धर्म शुक्ल ध्यावत सु ध्यान ॥६॥
जे शास्त्र कमेंडलु मोरपिच्छ, महा कोमल तार खुलीर तुच्छै ।
शुरभौली शरद लगे न जास, संजम कारन राखैं जु पास ॥ ७ ॥

१ तुल्य-समान २ पर्यन्त तक, ३ तबु जुदे और हलके ४ कम मूल्यकी ।

जे षट रस त्यागत लै अहार, उपशांत क्षुधा वृष काज सार ।
 षट आवश्यक संजम सुपक्ष, वैयावृत पालन प्रान रक्ष ॥ ८ ॥
 सिर नाभि प्रजंतन द्वार जेह, नहिं करत प्रवेश गृहस्थ गेह ।
 जे अंतराय मल दोष टार, इक बार असन पख मासकार ॥ ९ ॥
 जे कारण पंच न असन लेत, बलवृद्धि न काज न स्वाद हेत ।
 तनबर्द्धन काज न देह क्रांति, नहि वर्द्धन आउ सदा लु शान्ति ॥ १० ॥
 लखि अति उपसर्ग दया अभाव, अति रोग विषै नहिं असन चाव ।
 ब्रह्मचर्य भाव सन्यास मॉहि, इन कारण लघु भोजन कराहिं ॥ ११ ॥
 जे वीरासन खड्गासनीय, धनुषासन वज्रासन सुनीय ।
 गोदोहन पद्मासन लु वीर, नाता विधि आसन धरनधीर ॥ १२ ॥
 जिनेके पन विधि स्वाध्याय चित्त, स्वाध्याय वाचना मॉहि नित्त ।
 जे चार सुधाता पायवेश, स्वाध्याय करें सय ही सुनेश ॥ १३ ॥
 कर पग शुचिकर जलें प्रक्षाल, धर पद्मासन कर नमसकार ।
 जे शास्त्र उच्चार करें हमेस, मरजादा पूर्व संधै सुनेस ॥ १४ ॥

जे अवधि तुरिद्यं धर चरमं ग्यान, इन धारक मुनि कहिये महान ।
 मुनि राजऋषीश्वर ये चितार, अक्षीनविक्रियाऋद्धि धार ॥१५॥
 जे बुद्धि-आपधी ऋद्धिवंत, ते परम ऋषीश्वर परम संत ।
 जे देव ऋषीश्वर गगनगामि, जे परम ऋषी केवलि प्रमान ॥१६॥
 दीपक चिरकाल तने जु सोय, मन-बल पुनि ज्ञान विशेष होय ।
 संधैन वर वैरागभाव, एकाबिहारि मुनि गुन लखाव ॥ १७ ॥
 जे ऋादशांग श्रुतज्ञान पाय, ताबल जुग अंणि बढे सु धाय ।
 जे चार स्थानधर पन सुजेहिं, गुरु निकट न दीक्षा सीख देहिं ॥१८॥
 प्राच्छिन नरमा तप माहि जेहिं, गुरु कहिं ते माफिक दंड लेहिं ।
 जे न्यना बिधिके धारि नेम, ध्यावत अध्यातम ध्यान जेम ॥ १९ ॥
 जे कारन संघ कदाच साध, ऋादश योजन ताई न याध ।
 जे दोष जो वरषाकाल माहिं, तो दोष लगे तिनको जु नाहिं ॥ २० ॥
 जे दोष विशेष लग ज्ञान हानि, प्रायश्चित्त कर शुद्धि न ताहि जानि ।
 तो संघा बाह्य मुनि काहिं देहिं, ज्यों नागबेलि दल गलत तेहिं ॥२१॥

चौथा मन्त्र अर्थय ज्ञान २ केवलज्ञान ३ जिनका सहन उत्तम होवे ४ उपशम और शपक अणी

जे तीन धरने धर तन निरोग, वासी खुदेस निकषाय जोग ।
 इन्द्री खुपूर्ण पुनि पूर्ण देह, दिक्षा धर वर नर चिन्ह येह ॥ २२ ॥
 जिनके जिन-वचनन सों उछाहि, सुनिये पुनि धारन ग्रहन ताहि ।
 खुविचारत तत्त्वस्वरूप भाव, जे दीक्षा धर नर गुन लखाव ॥ २३ ॥
 कहूँ अर्वाधिज्ञान बिन लुरिय ज्ञान, कहूँ मनपरजय विन अवधि जान ।
 मनपरजय अवधि विना ऋषीस, लहि केवलज्ञान समस्त दीस ॥ २४ ॥
 जे, चढ़ि अजोग गुन थल विशाल, लछु पंचाक्षर उचरन काल ।
 लागे जो ता उन काल वास, तहाँ तिष्ठि सकलकरि कर्म नास ॥ २५ ॥
 जे पंडित पंडित-मरन पाय, इक समय विषै शिवलोक जाय ।
 ते गुरु गुन उरधर 'जगतराय', प्रणमै त्रिकाल नित शीष नाय ॥ २६ ॥

कवित्त ।

रत्नत्रय वृष क्षमा धीर्य धर, घने शास्त्र पढ़ि पायो पार ।
 कुलवर तन मनोग बहु दिनके, दीक्षित मोक्षभिलाषी सार ॥

१ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य । २ समाधिमरण ।

ज्ञान विराग भावना चल जुत, इत्यादिक गुन लखि गनधार ।
तिनको आचारजपद् दे सब, संघनमें अरु अज्ञाकार ॥२७॥
ॐ ह्रीं सम्यदर्शनज्ञानचारित्रादिगुणमंडितकृषीश्वर्येभ्यः पूर्णार्घिं नि०

गाथा ।

जो जण पढइ तियालं, णिव्बुइकंडंपि भावसुद्धीए ।
सुंजदि णरसुरसुक्खं, पच्छा सो लहइ णिव्वाणं ॥

सुन्दरी छन्द ।

पढहिं जे तिरकाल सुचाव सों, सुकतिकांड मनोहर भाव सों ॥
सुगत सुरनरके सुख तापिछै, लहें मोक्षपुरी सुख ते अछै ॥ २८ ॥

इत्याशीर्वादः ।

गीतिका छन्द ।

श्रुति देव गुरु जिनबिम्ब जिनग्रह, द्रव्य तीरथ जे भने ।
जिनग्रह भूथल पंचमंगल, क्षेत्र तीरथ जे गने ॥

१ अक्षय ।

कल्याणकाल अरु सिद्धचक्र, व्रतादि तीरथकाल ये ।
जे रतमंत्रय हे भाव-तीरथ, ताहि नाचत भाले ये ॥२९॥

सोरठा ।

द्रव्य क्षेत्र अरु काल, भाव तीर्थ ये चार हें ।
शिथिलाचारहि ढाल, धर्मरूप इन थल रहौ ॥ ३० ॥
इन थल पुण्य जु बंध हाम, जिमि सुवृष्टिको नाज ।
अद्य इन थल बंधन कठिन, वज्रलेप न इलाज ॥ ३१ ॥

सरती छंद ।

निर्वाण गिरा नहिं जानी, यह शारद ना पहुँचानी ।
ताविन शब्दारथ नाहीं, निशि दीप विना गृह माहीं ॥३२॥

इति निर्वाणभूमि समुच्चय पूजा समाप्त ।

५ श्रीत्रैलोक्य जिनालय पूजा ।

दोहा ।
भये जिनंद अनंत ।
कीप अढ़ाईके विषै, भये अनंतानंत ॥ १ ॥
हैने केवलज्ञानमय, नाथ अजग जिनालय जेह ।
तिनकों बंदन करि सदा, त्रिजग जिनालय जेह ॥ २ ॥
तिन सबको पूजन करौं, मन वच तन धर नेह ॥ ३ ॥
गाथा (त्रैलोक्यारकी) ।
तिहुवणजिणिंदगेहै, अकिटिगे किटिमे तिकालभवे ।
वणकुमरविडंगामरणरखेचरवंदिए वंदे ॥ १०१७ ॥

अकिल ।

तीन लोकके कृत्य, अकृत्य जिनालय जे ।
इन्द्र नरेन्द्र खगेन्द्र, नमावत भाल जे ॥
तिनकों बंदन जे, त्रिसुवन थिति गायकें ।
तिन सबकों मैं बंदौं, शीस नवाघकें ॥ ३ ॥

दोहा ।

क्रीतम और अक्रीतमा, जिनप्रतिमा जिनग्रेह ।

तिन सबकौ पूजन करौं, धारौं धर्म सेनेह ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंधिजिनालयेभ्यः अत्र अवतर अवतर सर्वीषट् । (इत्याब्दानम्)
अत्र तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्) अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधीकरणम्)

अष्टक ।

सुन्दरी छन्द ।

उदक क्षीर समुद्र समान जी, वानक भाजनमें भर आन जी ।

हरषधार महा छविवंत जे, अक्रीतम जिनगाय अहं जजे ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंबंधकृत्रिमजिनालयेभ्यो जन्ममरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वेषामीति
स्वाहा ॥ १ ॥

मलय-चन्दन गारि सु ल्यायकं । अति सुगंध रही महकायकं ॥हरष०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंधकृत्रिमजिनालयेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वेषामीति
स्वाहा ॥ २ ॥

धवल शालि पखारि पिछानकें । रजत थार विषै भर आनकें ॥ हरष० ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्धकृत्रिमजिनालयेभ्योऽष्टयपदपासये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥
 वर अनेक मनोहर फूल जे । तिनहिं लेय सुगंध संथूल जे ॥ हरष० ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्धकृत्रिमजिनालयेभ्यः कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति
 स्वाहा ॥ ४ ॥

सरस नेवज थाल सेजोयकें । परम सूरति श्रीजिन जोयकें ॥ हरष० ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्धकृत्रिमजिनालयेभ्यो सुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति
 स्वाहा ॥ ५ ॥

दिपत दीपक रत्न सुहावने, जगमगति सबै मनभावने ॥ हरष० ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्धकृत्रिमजिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति
 स्वाहा ॥ ६ ॥

परम धूप दशांग सुवास ले । अलि समूह रहे झुक आश ले ॥ हरष० ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्धकृत्रिमजिनालयेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

१ बड़ी । २ टेखकर ।

वर्कत आगम जे फल सारजी । विविध भौतिके कर धार जी ॥हरष०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्धकृत्रिमजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

सलिल आदिक लै वस्तु विधि सबै । विनयपूर्व प्रभ्रू-दिशिं है तबै ॥हरष०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्धकृत्रिमजिनालयेभ्योऽनर्थपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

परम पावन, सुन्दर सोहने । जगत जीव तने मनमोहने ।

धने प्रतक्ष जजं लख ते जहाँ । हम परोक्ष त्रिकाल जजं ग्रहाँ ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्धकृत्रिमजिनालयेभ्योऽनर्थपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

प्रत्येक पूजा ।

दोहा ।

तीन लोकें राजते, सदन अकृत्रिम जेह ।

तिन सबको सामान्यकरि, व्यासादिक धरणेह ॥ १ ॥

१ कहे छुए । २ भगवानकी ओर । ३ वे चन्प दे ओ माझत करना पूजन करते है ।

आयामदलं वासं, उभयदलं जिणधराणमुच्चतं ।
दारुदयदलं वासं, आणिद्वाराणि तस्सखं ॥ १७८ ॥

अद्विल ।

जिनगृह अचल मनोग, सुवनत्रयके विलै ।
उत्तम मध्यम, और जघन्य सबे अखै ॥
तिनकी अब लम्बाई, क्रमतेँ जानिये ।
जोजन शतक पचास, पचीस प्रमानिये ॥२॥

हरिगीतिका ।

जिनतेँ सु अर्द्ध प्रमान चौड़े, अब ऊँचाई तिन तनी ।
लम्बाइ चौड़ाई मिलायेँ, आध कर जोजन भनी ॥
त्रय भौति जिनगृह द्वार गुरु, तिन उदय जोजन खास है ।
सो जान सोलह आठ चव, तिन अधिकरी यह व्यास है ॥३॥

१ लम्बाई चौड़ाईके जोड़ेसे -आधी ।

उत्कृष्ट मध्यम जघन चैत्यालय, न लघु द्वारानकी ।
 इमि आध वसु चव दोय जोजन, व्यास इन आधानकी ॥
 उत्कृष्ट मध्यम जघन जिनगृह, जान व्यासादिक भनो ।
 क्रमतेँ सु आधा आध जानहु, अथ विशेष तिनो सुनो ॥४॥
 ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्धकत्रिमजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

गाथा ।

वरमञ्जिमअवराणं, दलकमं भद्रसालणंदणगा ।
 गंदीसरगविमाणगजिणालया होंति जेडा हू ॥ १७९ ॥
 सोमणसरुजगकुंडलवक्खारिसुगारमाणुसुत्तरगा ।
 कुलगिरिगा वि य मञ्जिम जिणालया पांडुगा अवरा ॥ १८० ॥

चाल छंद ।

वर भद्रसाल सुखकारी, नन्दनवन सार निहारी ।
 नंदीश्वर द्वीप गृहारी, वैमानिक जान भक्षारी ॥ ५ ॥
 इन विपैँ जिनालय सारे, उत्कृष्ट सैँ सुखकारे ।
 तहाँ पूजन सुरगन जाहीं, हम पूजत इह थल पाहीं ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं सर्वोत्कृष्टजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

सोमनस अरन मनहारे, कुंडलगिरि रुचकपहारे ।

वक्षार कुलाचल सीस, पुनि इशवाकार गिरीस ॥ ७ ॥

गिरि मानषोत्रके माहीं, मध्यम जिनधाम कहाहीं ।

तहाँ पूजन सुरगन जाहीं, हम पूजत इस थल माहीं ॥८॥

ॐ ह्रीं सर्वे मध्यमजिनालय जिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

पांडुकवन माँहि जिनालै, ते सर्वे जघन्य कहालै ।

तहै पूजत सुरगन जाहीं, हम पूजत इस थल पाहीं ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं सर्वजघन्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

गाथा ।

जोयणसय आयामं दलगाढं सोलसं हु दारुदयं ।

जेद्वानं गिहपासे आणिदाराणि दो हो हु ॥ ९८१ ॥

गीतिका छंद-।

तिन नींब जोजन आध-शत आयामं जोजन सबनिकी ।

१ लबाई ।

जोखन तु सोलह द्वार तुंग सु, द्वार सन्मुख दिशानिकी ॥
अरु जिनगृहनके दोउ पारसवनमें दो दो द्वार हैं ।
छोटि बखाने फेर पीछे, द्वार नार्हीं धार हैं ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं उत्कृष्ट जिनालय जिनकी लंकाई १०० योजन, नीव आष योजन, नडे
द्वारकी दिशा सन्मुख अर सोला योजन ऊंची, और दो दो द्वार छोटे, दोनों पार्श्वेन विषे
जिनालय पीछे द्वार नार्हीं, ऐसे जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्य निवंपामीति स्वाहा ॥५॥

गाथा ।

वेयडुंजंभुसामलिजिणभवणणं तु कोस आयामं ।
सेसाणं सगजोगं, आयामं होदि जिणदिडुं ॥ १८२ ॥

हरिगीत छन्द ।

वेताअ जंभु कुरुह शालमलि, पर सु जिन गृह लेखिये ।
तिनकी लंबाई कोस एक, प्रमान पुनि अवशेषिये ॥
वितरन भावन ज्योतिषी, इत्यादि जिनगृह-पाँति हैं ।
जंथा जोग तिनि आयाम, श्रीजिनदेव लखि बहु भाँति हैं ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं उत्कृष्ट आदि विशेषण रहित जिनालयनिनिबिम्बेभ्योऽर्थं निर्वपामीति स्वाहा ॥१

गाथा ।

चण्डगोडरमणिसालति वीहिं पडि माणथंभ णवथुहा ।
वणघयचेदियभूमी जिणभवणाणं च सव्वेसिं ॥ ९८३ ॥

कवित्त ।

सर्वे जिन सदूम चार द्वारनेतं शोभनीक, मणिमई तिन कोटि लसत उत्तंग हैं ।
द्वारनकर जविकी गली तिनमें एक एक, बीथी प्रति एक एक सो हैं मानथंभ हैं ॥
और नव नव रूप फेरि तिन तीन कोट, बीच बीच अंतराल वाहि वन झूम हैं ।
द्विती तृती कोट बीच हुआयें फरहरात, तृती कोट चैत्यालय बीच चैतभूमि हैं ॥१२॥

ॐ ह्रीं सर्वे जिन भवनके चार द्वार संयुक्त मणिमई तीन कोट, बीथी, प्रति मानथंभ,
नव रूप, अशोक, सप्तच्छद, चंपक आत्र इन मई चार वन मध्य तीन पीठकर संयुक्त
मणिमई डाली, पान, फूलकर संयुक्त ऐसे चारों वनके मध्य प्राप्त जिनविम्ब सहित
चैत्यवृक्ष जिनबिम्बेभ्योऽर्थं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

१ स्त्र प ।

गाथा ।

जिणभवणे अट्टसया गढभगिहा रयणथंभवं तत्थ ।
देवच्छंदो हेमो दुगअडचउवासदीहुदओ ॥ ९८४ ॥

सुन्दरी छन्द ।

तिन जिनालयमें वसु एकसौ, गरभगेह बने सुख देतसो ।
अरु तहाँ जिनमंदिर मध्यने, रतनथंभ सुवर्णमई बने ॥ १३ ॥
जुगल जोजन चोडिय है तिनै, आठ जोजन छंवाई भनै ।
तुरिय जोजन ऊचपनो गिने, देवच्छद छप्पर सोहने ॥ १४ ॥
ॐ ह्रीं गर्भगृहदेवच्छदछपरमंडपसंयुक्तजिनालयजिनविम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाह ॥८॥

गाथा ।

सिंहासणादिसहिया, विणीलकुंतल सुवज्जमयदंता ।
विद्रुडुमअहरा किसलयसोहाग्रहत्थपायतला ॥ ९८५ ॥
दसतालमाणलक्खणभरिया, पेक्खंत इव वदंता वा ।
पुरुजिणतुंगा पडिमा रयणयमा अट्टअहियसया ॥९८६॥

१-एकसौ आठ । २-मज्ज ।

द्वार मंगलकी ।

सिंहासन छत्रादि, सहित प्रतिबिम्ब ते ।
नीलवरन तिन केश, शिखापर शोभते ॥
वज्रमई तिन दसन, ओंठ आरक्त हैं ।
वर नवीन कोंपल समकर पद रक्त हैं ॥ १५ ॥
ऐसे जिनेशाकार पुद्गलरूप आपहिं परतये ।
दस ताल मान प्रमान ताल, प्रमान द्वादश अंगुलये ।
जिनराजवत विहसेक बोलें, रिषैभवत तन मानिये ॥
ते रतनमय शत आठ प्रतिगृह गर्भ इक इक जानिये ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं एकसौ आठ गर्भगृह तिनमें सिंहासनछत्रादि संयुक्त रत्नमय विराजमान एक एक जिनविग्नेम्योर्ध्व निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

गाथा ।

चमरकरणागजक्खगवतीसंमिहुणंगंहि पुह जुत्ता ।
सरसीए पंतीए गभगिहे सुट्टु सोहंति ॥ १८७ ॥

१ दांत । २ ऋक्षप्रभुके शरीरके बराबर ५०० घट्टण ।

सिरिदेवी खुदेदेवी सव्याणहसणकुमारजखलाणं ।
रूवाणि य जिणपासे मंगलमडुविहमवि होदि ॥ ९८८ ॥

द्वार मंगलकी ।

नागकुमार-अरु जक्ष जुगल बत्तीस ते, एक एक गृहगर्भ खड़े समरूप ते ।
पंकतियद्ध यरोयर सोहं जुदे जुदे, चौसठ तिनके चमर हस्त चित्रित खुदे ॥ १७

खुदे तिनकर वीर्धवान, जिनेश पुनि पार्ध्वन तनै ।

श्रीदेवि अरु सरसुती देवी यक्ष सर्वाणह कनै ॥

अरु यक्ष शनत्कुमार, इन चउ रूपके प्रतिबिम्ब हैं ।

यह प्रश्न—श्रीधनरूप सरसुति वानि, कथों प्रतिबिम्ब हैं ? ॥ १८ ॥

अद्विष्ट ।

(उत्तर)—श्रीदेवी सरस्वति दोऊ उत्कृष्ट हैं ।

तातें इनकी देवांगन आकृति हैं ॥

बहुर यक्ष ये दोऊ भक्त विशेष हैं ।

तातें तिन आकार अनादि लिखेस हैं ॥ १९ ॥

हैं
 ॐ ह्रीं नागकुमार और यक्षनके बत्तीस जुगल गर्भगृह प्रति खड़े चौसठ शंकर
 कर त्रिनके, प्रतिमाओंके दोनों तरफ श्रीलक्ष्मी और सरस्वतीदेवी सर्वाण्ड शानत्कुमार यक्ष
 इन चित्रामोंकर युक्त जिनालयजिनत्रिम्बेयोर्ध्व निर्धपामीति स्वाहा ॥१०॥

गाथा ।

भिगारकलसदप्पणवीयणधयचामारादवत्तमहा ।

सुवहट्ट मंगलाणि य, अट्टहियसयाणि पत्तेयं ॥१८१॥

सुन्दरी छन्द ।

निकट श्रीप्रतिधिम्बनके जहाँ, खचित अष्ट सु मंगल द्रव्व तहाँ ।

गन अठोत्तर सौ इक जातकी, सरव मंगलद्रव्य सुहावती ॥१०॥

ॐ ह्रीं चमर छत्र कलश झालर सांथिया ठोना पंखा दर्पण इन अष्टमंगल द्रव्योंके
 चित्रोंकर संयुक्त जिनालयजिनत्रिम्बेयोर्ध्व निर्धपामीति स्वाहा ॥

(आगे गर्भगृहके नाहिरका स्वरूप कहते हैं ।)

गाथा ।

मणिकणघपुडफंसोहियदेवच्छंदरस पुव्वदो मज्जे ।

वसईए रूपकंचणघणसहस्साणि बत्तीसं ॥१९०॥

बाल-जोगीराहसाक्षी ।

मनि सुवरनमय पुरुषानि कर जुत, देवच्छदगृह सोहे ।
ताके पूर्व विबै बस्ती जो, जिनमन्दिर मन मोहे ॥
ताके मध्य विपै रूपामय, कंचन वर्ण घड़े हैं ।
सहस्र बत्तीस अनादिनिधन ते, पृथिवी माँहि धरे हैं ॥२१॥

ॐ ह्रीं सोमक्रांत सुवर्ण रूपामय बत्तीस हजार घडे संयुक्त जिनालयेजिनविम्बेभ्योऽर्घ
निर्वैपभीति स्वाहा ॥१२॥

गाथा ।

महदारसस दृपासे, चउवीससहस्रसमत्थि ध्रुवघडा ।
दारबहिं पासदुगे, अहसहस्राणि मणिमाला ॥ १९१ ॥
तम्मज्झ हेममाला, चउवीसं वदणमंडवे हेमा ।
कलसामाला सोलस, सोलसहस्राणि ध्रुवघडा ॥ १९२ ॥

अटिठ ।

महाश्वार जो बड़े द्वारेके पार्श्व दो, चौबिस सहस्र ध्रुप घट पुनिमह द्वार दो ।
गहि पास दो और विबै लूमे तहाँ, आठ सहस्र मनिमय माला झूमे वहाँ ॥२२

गीतिका छंद ।

तिनि माल बिच सहस चौबिस, माल सुवरनमय जहाँ ।
हैं बहुर तिन महि द्वार आगे, सु सुखमंडप हैं तहाँ ॥

तिस विषैं कलश सुवर्णमाला, सोल सोलह सहस हैं ।

बहुरि सोलह सहस तिन मधि धूप घट महकहत हैं ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं बड़े द्वारकै पार्श्वनमें द्वारके आगे मंडपमें धूप घटमाला संयुक्त त्रिनालय-
त्रिनविन्द्वेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३ ॥

गाथा ।

सुहुरक्षणाणिणादा, मोत्तिथमणिणिमिया सकिकिणिया ।
अष्टुविह्वंटाजाला रहदा सोहंति तम्मज्जे ॥ २९३ ॥

अद्विल ।

तिन सन्सुख मंडपके मध घंटा बड़े ।

भीठे छुन छुन शब्द, करें मोनिन जड़े ॥

किंकिन छोटी घंटि सहित बहु लुक्ति हैं ।

घंटन लुटथ भनेक, सुरचना लुक्त हैं ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं शंखा आदि अनेक रचना संयुक्त अनेक निनालयजिनविम्बेभ्योऽर्घं नि० ॥१४
(अथ तिन मंदिरोंके छोटे द्वारोंका स्वरूप कहते हैं ।)

गाथा ।

वसईमज्झगदक्खिणउत्तरतणुदारगे तदद्धं सु ।
तप्पुहं मणिकंचणमालडुचउवीसगसहसं ॥ १२४ ॥

गीतिका छंद ।

जिन सदन दक्खिन अत्र उत्तर, पार्श्वके मध्यम विषे ।
तई द्वार छोटे जान यह पुनि, बड़े द्वारिनते लिखे ॥
मणिमाल आदिका प्रमान सु, पूर्वते आधा यहाँ ।
वसु सहस माला सदन पीछे, सहस चौबिस हैं तहाँ ॥ २५ ॥
ॐ ह्रीं बड़े द्वारोंसे मणिमाला आदिका प्रमान यहाँ बाधे छोटे द्वार संयुक्तजिना-
लय भिनविम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१५॥

द्वार मगलनी ।

माला तो चौगिरद भीतके लूमती, घड़े रतनमय ऊपर धूप सु घूमती ।

१ मणिमाला ६००० । २ सुवर्णमाला २४००० ।

घंटा मंडप बीच खु लूमत जानिधे, इत्यादिक रचना जिनमंदिर मानिये। २६
 मानिये कोट जु तीन वेदी, पाँच भूमि सु आठ ही ।
 इत्यादि समोशरण विभूति, कहे पढ़े जिन पाठ ही ।
 जो सुनन चाहि विशेष भविजन, तो त्रिलोक जु सार ही ।
 सुन होहु हर्षित धनपती, कहि नाहि पावत पार ही ॥२७॥
 ॐ ह्रीं समवशरण अनादिनिधनस्थितअनेकरचनासंयुक्तजिनालयजिनविश्वेभ्योऽर्धं

निर्वपामीति स्वाहा ॥१६॥

ढाल-त्रिभुवन गुरुस्वामीकी ।

पुनि जे चैत्यालय जी, सामायिकवाले जी, तिनि आदि क्रिया करनेके थान है जी ।
 हैं बंदन मंडप जी, तिन शोभ अखंडप जी, हैं अस्नान करनेके अस्थान बने जहाँ जी ॥
 अभिषेक सुमंडप जी, नगजडित मंडपजी, हैं नृत्य करनेके अस्थान सुहाबने जी ।
 नर्तन वर मंडपजी, लखते अघ खंडप जी, अवलोक करनेके स्थान बने जहाँ जी ॥३८॥
 अवलोकन मंडपजी, जिनि शोभ अखंडप जी, गिरिक्रीड़ा करनेके गृह अस्थान हैं जी ॥

१ नृत्य करनेके ॥

श्रुतिभ्यासन थानकजी, सुगुनन गृह मानिकजी, विस्तीरण लचम पट चित्रापादि जी ।
लखने वर स्थानकजी, पटिसाला मानिकजी, जिनकर संयुक्त जिनालय शोधिते जी ॥ ३९

ह्रीं ॐ त्रैलोक्यसम्बंधी जिनमन्दिर सामायिकादि क्रिया करनेके स्थान संयुक्त
जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७ ॥

गाथा ।

जिणसिद्धाणं पडिमा, अकिट्टिमा किट्टिमा तु आदिसोदा ।
रणमया हेममया, रूपमया ताणि वंदामि ॥ १०१५ ॥

अडिष्ठ ।

आकृत्रिम सु अनादिनिधन वपु परनये ।
अरु कृत्रिम जी भविजीवन करते भये ॥
रतननमय ते हेममई रूपामई ।
अरहंतन अरु सिद्धनकी प्रतिमा कही ॥
तिन बिम्बनको मैं बंदो थुतिकर अदा ।
धनि जे जिय जो परतंछ लखि पूजैं सदा ॥ ४० ॥

ॐ ह्रीं जिनविम्बेभ्यो पूर्णधिं निर्वपामीति स्वाहा ॥१८॥

गाथा ।

भवणेषु सत्तकोडी, बावत्तरिलक्ख होंति जिणगेहा ।
भवणामरिंदमहिया, भवणसमा ताणि वंदासि ॥ ३०८ ॥

अन्की छन्द ।

सात कोडि बहत्तर लाख ते, भवन तुल्य मनोहर भाखि ते ।
चमर आदि जजै हर सारजे, भवनवासिनके जिनआगारजे ॥ ३१ ॥

ॐ ह्रीं भवनवासी देवोंके सात कोडि बहत्तरलाख जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१९॥

णमह णरलोयजिणघर, चत्तारि सयाणि दोविहीणाणि ।
बावणं चळ चडरो, णंदिासर कुंडले रुचगे ॥ ५११ ॥

भुजगी छन्द ।

मनुष्यलोकमें चारसैं दोय घाटी, जिनालय नमो ते महा 'सर्मपाठी ।
बहुरि लोक तिर्जग विषै दीप 'आठी, प्रभू गेह बावन जनों कर्म काठी ॥३२॥

१ आनन्द । आठव द्वीप नन्दीश्वर ॥

कहै चार कुंडल गिरो पापहारी, बने ते नमों में परम भक्ति धारी ।
 बने गिरि रुचिकपै चार कर्महारी, जलैं सार सुंदर सरस अर्घ धारी ॥ ३३ ॥
 ॐ ह्रीं मनुष्यक्षेत्र और त्रिजग क्षेत्रके चारसैं अष्टावन जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति
 स्वाहा ॥

गाथा ।

मंदरकुलवक्खारिसुमणुसुत्तररूपजंघुसामलिखु ।
 सीदी तीसं तु सयं चउ चउ सत्तरिसयं दुपणं ॥ ५१२ ॥

भुजगी छर ।

महामेरुनपै असी देव आलय, कुलाचल खिखर तीस सिर तीस छाजय ।
 गजदंत गिरि बीस पै बीस आलय, असा खिखर बछार गिरिपै जिनालय ॥ ३४ ॥
 इष्वाकार चौ चारि मानपोत्तरालय, शतक एक सचर जु वैतल्य गजय ।
 देव उतर कुरु दस पै दस हैं जिनालय, मनुष्यलोकमें जिनगेह ये बिराजय ॥ ३५ ॥
 ॐ ह्रीं मनुष्यक्षेत्रसम्बंधी तीनसैं अठानवै जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३१ ॥

गाथा ।

तिष्ठिणसयजोयणानं, कदिहिदपदरसस संखभागमिदे ।
भौमाणं जिणगेहे, गणणातीदे णमंसामि ॥ ३५० ॥

मुज्जगी छद ।

जोजन महत् तीन सैका किये बर्ग, जो जन भये सहस नब्बे सबेई ।
बहुरि एक जो जन सात लख और, अइसठ सहस अंगुल होय तेई ॥
ऐसे सहस्र नब्बे करे जो जनोके जिते होहि अंगुल त्रिरासिक करेहा ।
सो ही वर्गरासिक तिनोका गुनाकार, भागाहार सतती जगत्प्रतर देई ॥ ३५१ ॥

ॐ ही तीनसौ योजनके वर्गका भाग जगत्प्रतरको दिये जो प्रामानि होवे उसके संख्यातवै भाग प्रमान व्यंतरदेव संबंधी जिनमन्दिर गननातीत कहिये असंख्यात हैं लौकिक गिनती कर गिने न जाय, ऐसे कर पूर्वोक्त व्यन्तर प्रमानको संख्यातकी सहनांनी ऐसी कही, इतने जिनालयेम्योऽर्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३५२ ॥

गाथा ।

बेसदछप्पणंगुलकदिहिदपदरसस संखभागमिदे ।
जोइसजिणिंदगेहे गणणातीदे णमंसामि ॥ ३०२ ॥

अद्विल ।

दोय शत छप्पन अंगुलके वर्गका, भाग जगत्प्रतरको दिये लो प्रमान का ।
ताके संख्यातेवें भाग परमान हे, असंख्यात जिनेन्द्र मन्दिर; अभिरा १ ३ ७ ॥
ॐ ह्रीं दोसे छप्पनका वर्ग पनठी सुच्याकुलका वर्ग प्रतरांगुल सो फा. नेठी प्रमान
प्रतरांगुलका भाग जगत्प्रतरको दीजिये इतने ज्योतिष निम्न हैं सोई असंख्यात . द्वीप समुद्र
संबंधी सर्वज्योतिषी निम्नका प्रमान जान ऐसे जिनालयेभ्यो अर्ध निर्वपामीति स्वाहा ॥

गाथा ।

बुलसीदिलखलसत्ताणउदिसहस्से तहेव तेवीसे ।
सन्वे विमाणसमणगजिणिंदगेहे णमंसामि ॥४५१॥

अद्विल ।

छाल चौरासी सहस सतानेवें मानिये, तेइस सर्व विमान जिनालय जानिये ।
एक एक सुर जान जिनेश्वर थोक है, ऊर्ध्वलोकके भवन तिन्हें पगथोक है ॥३८॥
ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोकस्य चतुरशीतिलक्ष नवतिशतसहस त्रयोविशतिविमानसंख्या एव सर्व
जिनालयेभ्योऽर्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥२४॥

१ पेंसठ हजार तीनसो छतीस ॥

गाथा ।

कोडी लखल सहस्रं अट्टय छप्पण ससणत्ती य ।
चडसदमेगासीदी गणणगए वेदिए वंदे ॥ १०२६ ॥

गीतिका छंद ।

बसु कोछि छप्पन लाख सँतानवें सहस बखानिये ।
चारसै हक्यासी खुलोकाकाश मोंहि प्रमानिये ॥
इह भवनवासी आदि जिनगृह लोकमधि संख्या भनी ।
उद्योतिषी व्यंतर भवन सम्बंधी असंख्याते तनी ॥ ३९ ॥
ॐ ह्रीं लोकाकाशसम्बंधीसंयुक्तसमुदायरूपजिनालयेभ्योऽर्घं नि० ॥२१॥

गाथा ।

णव कोछिय सया पनवीसा तेवन लाख सहस सत्तावीसा ।
नवसै अवर अठाला जिनपडिमों अकट्टिमा पंदे ॥

सवैया वैश्या ।

नौ सौ पचीस करोर तिरपन, लाख हजार सत्ताइस गाये ।
और फूहे नव सै अडतालि, त्रिलोक जिनालयके दरसाये ॥

ये प्रतिबिम्ब विराजत हैं, इक एक जिनालय सौ अठगाथे ।
जोर करे इकठे तिनको 'जगराम' नमें नित शीस नवाथे ॥४०॥

ॐ ह्रीं अनंत सम्बंधी मंगलके अर्थ संख्याकर संयुक्त जे त्रिलोक सम्बंधी जिनालयोंमें नौसे पच्चीस करोड त्रेपन लाख सत्ताईस हजार नौसे अड़तालीस श्रीजिनबिम्बेम्बो पूर्णधिं निर्वपामीति स्वाहा ॥२६॥

दोहा ।

तीन भवनके सदन जिन, तिन प्रतिधिम्ब विशाल ।
भवनन जुत प्रत्येक सब, वरनों वर जयमाल ॥ १ ॥

जयमाला ।

भुजगी छन्द ।

जिनालय बहतर लाख सात कोड़ी, तहाँ आठसे बिम्ब तेतीस कोड़ी ।
छिहतर कहे लाख सुन्दर सुहाये, नमों बिम्ब पातालके माथ नाये ॥२॥
प्रथम जम्बूद्वीप विधै जिनदिवाले, अठतर अक्रीतम महा शोभवाले ।
सहस आठ शत चार चौबीस गाथे, तहाँ बिम्ब राजे तिले सीस नाये ॥३॥

दुती भारतीखंडके जिनगृहलि, अठान्न अधिक एक शत विशाले ।
 सहस्र सत्र चौसठ तर्षो विम्बदरसी, नमो हाथ धर माथ जिन गुन समरसी ॥४॥
 तिरजंच धरा क्षेत्रमें चैत्य सोहें, कहे दुगुन वतीस लख चित्त मोहे ।
 सहस्र पट शतक नव द्वादश बखाने, नमो हाथ धर माथ प्रतिविम्ब जाने ॥५॥
 असंख्यात व्यंता विबुध ज्योतिषनके, जिनालय असंख्यात अविचल सबनके ।
 असंख्यात जिनविम्ब राजै तिनोंमे, नमो हाथ धर माथ अरजी करो मै ॥ ६ ॥
 प्रथम नर्क ते ऊर्ध्वगृह लख चुरासी, सहस्र संतानवें तेईस सर्व भार्ती ।
 प्रतिकोडि इक नव छिहचार लखासी, अठत्तर सहस्र चारसै अरु चुरासी ॥ ७ ॥
 नदी सरस सीता सितोदा तडाग्रे, सहस्र शैल कंचन कहे तिन सिराग्रे ।
 अद्भुत महान सहस्र आनंदकारी, तिनोको जु अष्टांग वंदना हमारी ॥ ८ ॥
 प्रथम भरत नरइन्द्र कैलाशकूटे, तहाँ विम्ब निर्मापि अधगुन्द्र छूटे ।
 बहुर भव्य जीवन करे मध्यलोकै, तिन्है प्रात ही सदा नमै सुखल होते ॥९॥
 महा एक सतकक्षेत्र सत्तर जु मुक्ता, नमो पंचकल्यानक सार जुक्ता ।
 कहे कृत्य कुल जिनालय त्रिलोकं, सबै विम्ब राजे हूँदै धार धोकं ॥१०॥

अतीता अनागत कहे वर्त्तमानं, जिनेन्द्रादि रत्नत्रयं भूषितानं ।
जगतमें कहे सार तीरथ महानी, नैमै सो 'जगतराम' अष्टांग आनी ॥१२॥

उक्तं च ।

घावन्ति जिनचैतयानि विद्यन्ते भुवनत्रये ।
तावन्ति सततं भक्त्या अिपरीत्य नमाम्यहम् ॥

अडिल ।

जो इह पूजन सार करे अभ्यासने, सकल तीर्थकी बंदन कीनी तासने ।
रोग किलेश नशे धन धान्य जु आवहीं, अट्टकमसों शिवराज परमपद पावहीं ॥१२॥

इत्याशीवदिः ।

इति श्री त्रैलोक्यजिनालय पूजा समाप्त ।

स्तुति ।

दोहा ।

प्रणमि सुगुरु अरहंतपद, प्रणमि सिद्धवर देव ।
आचारज डवझाय णमि, प्रणमि साधु पद सेव ॥१॥

मुनयनामद छंद ।

इन्द्र धरगोन्द्र नरइन्द्र जग ईशके, होय अनुचर धौ छत्रत्रय सीसके ।
पंचकल्पान लहि घातिया जय लये, गणधरादिक जलै परम हर्षित भये ॥२॥
ज्ञान दर्शन जुगल ये अनंते महा, ध्यान वर शुक्ल सो अनंते सुख लहा ।
बीजै सो अनंत कहते परमदेव जी, द्यो प्रभु श्रेष्ठ मंगल हमे सेवजी ॥३॥
जनम जर मरन ये प्रबल त्रय नद्य ते, ध्यानरूपी अधिवाण कर दग्ध ते ।
सास्वता सिद्धपद पाय गन सिद्ध ते, द्यो हमे पंचमो ज्ञान परिसिद्ध जे ॥४॥
ज्ञान दर्शन तथा बीजै चारित्र ये, पंच आचारके धार आचार्य जे ।
येहि पंचाशिके साधवाले तपी, संघ मुनि ता विषै परम नायक जपी ॥५॥

संभ्यक्त रत्नादि गंभीर गुण धार है, अंग द्वादश श्रुतिज्ञान-दाधि पार है ।
 सूर होते शिवरूप लक्ष्मी यदा, द्यो हर्मे सरस्वती अंत रहिते सदा ॥ ६ ॥
 द्यौर अति रौद्र दुख थान भयानक दिखै, जगतरूपीव जह-^१अरण तिहिके विषै ।
 वदन विवर्णाल नख कठिन तीक्ष्ण दिखै, पापरूपी इसा सिंह जिहिके विषै ॥७॥
 मुनिरूपी मुगम पंथते भृष्ट है, मोह मिथ्या कुतप सेय अति कष्ट है ।
 इसे भक्ति जीव शिवमार्ग परकाशते, द्यो हर्मे श्रेष्ठ पाठक पठन पाठते ॥८॥
 उग्र तप चरनकर अंग सोपित भया, धर्म अरु शुक्लजुग ध्यानमाही ठया ।
 भेद पट द्रव्य स्वरूप त्रयकाल जे, ज्ञान ध्यावत मु निज आतमलाल जे ॥९॥
 जीव पटकाय रखपाल समभाव ते, करम वन दहन लहि परमपद ध्यावते ।
 तीस वसु मूलगुन धार ऋषिदेवजी, द्यो गुरु श्रेष्ठ मंगल हर्मे सेवजी ॥१०॥

व्रता ।

येही परम गुरु परमेष्ठी, ये ही सकल हितू सुखकारं ।
 ये ही उत्तम पुरुष जगतमें, ये ही मनवांछित दातारं ॥

ये ही संगलमय मंगल कर, ये ही पंचमगति करतारं ।
 इनके पदकी भव भव शरनं, मागो परम जगतमें सारं ॥ ११ ॥
 ॐ ह्रीं अर्हतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो महार्घं निर्वपाभीति स्वाहा ॥

अद्विल्ल ।

इहि प्रकार यह श्रुति है ताके काजको, पंच परम गुरु बंदौ नित प्रति साजकों ।
 कठिन जगत वनवेल सु छेद लहाय जी, कर्म काठ दहि मुक्ति परमपद पाय जी ॥१२॥

इत्याचीवादिः ।

अरुहा सिद्धाहरिया, लवझाया साहु पंचपरमेही ।
 एयाण णेसुक्कारो, भवे भवे मम सुहं दिंतु ॥

दोहा ।

दोष रहित अरहत गुण, सवतसरके अंक ।
 पौष अमरको जोदेशी, पूरन पढौ निशंक ॥१३॥

इत्याचीवादिः ।

(१०८ जाप देना चाहिये ।)

१ सप्त १८४६ । २ पौष यदि १३ ॥

दोहा ।

जो 'निर्वाणक विधि' सुने, तीरथ फल हो तास ।
क्रासिक कृष्ण चतुर्दशी, भयो उदोत प्रकाश ॥१४ ॥
मन बच कस कर पूजहीं, अरु उपदेशों धर्म ।
ते नर तीरथको लईं, दास करे तिहि कर्म ॥ १५ ॥

इति निर्वाणविधान ।

कविवरभैया भगवतीदासजीरचित-

निर्वाणकांड भाषा ।

दोहा-धीतराण वंदों सदा, भावसहित सिर नाथ ।
कहं कांड निर्वाणकी, भाषा सुगम बनाय ॥ १ ॥

नौपाई १६ मात्रा ।

अष्टापदभादीसुरस्वामि । वासुपुज्य चंपापुरि नामि ॥ नेमिनाथस्वामी गिरनार ।
वंदों भावभगति उरधार ॥२॥ चरम तीर्थकर चरमशरीर । पावापुरि स्वामी महाबीर ॥
चिलरसमेद भिन्नेसुर नीस । भावसहित वंदों जगदीस ॥ ३ ॥ वरदतराय रु इंद सुनिंद ।

सायदत्त आदि गुणवृन्द ॥ नगरतारवर मुनि उठकोडि । वंदौ भावसहित कर जोडि ॥ ४ ॥
 श्रीगिरिनारशिखर विख्यात । कोडि बहत्तर अरु सौ सात ॥ संबु प्रबुद्ध । कुमार द्वे भाय ।
 अनिरुधआदि नमूं तसु पाय ॥ ५ ॥ रामचंद्रके सुत द्वे वीर । काडनरिंद आदि गुणधीर ॥
 पांच कोडि मुनि मुक्तिमहार । पावागिरि वंदौ निरधार ॥ ६ ॥ पांडव तीन द्रविड राजान ।
 आठकोडि मुनि मुकति पयान ॥ श्रीशत्रुंजयगिरिके सीस । भावसहित वंदौ निशदीस ॥ ७ ॥
 जे नलिभद्र मुकतिमें गये । आठकोडि मुनि औरहि भये ॥ श्रीग नपंथशिखर सुविशाल ।
 तिनके चरण नमूं तिहुं काल ॥ ८ ॥ राम हनू सुग्रीव सुडील । गवय,वाख्य नील महानील ॥
 कोडि निन्याणवै मुक्ति पयान । वृंगीगिरि वंदौ धरि ध्यान ॥ ९ ॥ नंग अंग कुमार सुजान ।
 पंचकोडि अरु अर्धप्रमाण । मुक्ति गये सिहुनागिर सीसा ते वंदौ त्रिसुवनपति इस ॥ १० ॥
 रावणके सुत आदि कुमार । मुक्ति गये रेवातट सार ॥ कोडि पंच अरु काल पचास ।
 ते वंदौ धरि परम हुलास ॥ ११ ॥ रेवानंदी सिद्धवरकूट । पश्चिमदिशा देह जहें छूट ॥
 द्वे चक्री दश कामकुमार । उठकोडि वंदौ भवपार ॥ १२ ॥ बडवाणी बडनयर सुचंग ।
 दक्षिण दिश गिरि चूल उतंग ॥ इंद्रनीत अरु कुंभ शु कर्ण । ते वंदौ भवसायरतण ॥ १३ ॥

१ सोडे तीन करोड ।

सुवरणभद्रआदि मुनि चार । पावागिरिवर शिखरमझार ॥ चलना नदी तीरके पास ।
 मुक्ति गये वंदों नित तास ॥ १४ ॥ फलहोडी बड़ गाम अनूप । पश्चिमदिशा द्रोणगिरिरूप ॥
 गुरुदत्तादि मुनीसुर जहाँ । मुक्ति गये वंदों नित तहाँ ॥ १५ ॥ बालि महाबालि मुनि दोग्य ।
 नागकुमार भिंलें त्रय होय ॥ श्रीअष्टापद मुक्तिमझार । ते वंदों नित सुरत सँभार ॥ १६ ॥
 अचलापुरकी दिशा दृशान । तहां मेढगिरि नाम प्रधान ॥ साढ़ेतीन कोड़ि मुनिराय ।
 तिनके चरन नमू चित लाय ॥ १७ ॥ वंशस्थल वनके ढिग होय । पश्चिमदिशा कुंतुगिरि सोय ॥
 कुलभूषण दिशभूषण नाम । तिनके चरणनि करूं प्रणाम ॥ १८ ॥ दसरथराजाके सुत कहे ।
 देश कलिंग पांचसौ लहे ॥ कोटि शिला मुनि कोटिप्रमान । वंदन करूं जोर जुगपान ॥ १९ ॥
 समवसरण श्रीपार्श्वजिनद । रेसंदीगिरि नयनानंद ॥ वरदत्तादि पंच ऋषिराज । ते वंदों नित
 धरमभिहाज ॥ २० ॥ तीन लोकके तीरथ जहाँ । नितप्रति वंदन कीजे तहाँ ॥ मन वच
 कायसहित सिरनाय । वंदन करहि भविक गुण गाय ॥ २१ ॥ संवत सतरहसौ हकताल ।
 अधिनसुदि दशमी सुविशाल ॥ 'भैया' वंदन करहि त्रिकाल । जय निर्वाणकांड
 गुणमाल ॥ २२ ॥

इति निर्माणकांड भाषा ।

